श्री जिन-पूजा



निर्ग्रन्थ प्रकाशन
नरहरपुरा, वाराणसी

विषय-वर्णन

मुद्रक : [illegible] कुमार '[illegible]' [illegible]

मूल्य : [illegible]

श्री जिन मन्दिर दर्शन विधि



घर से स्वच्छ वस्त्र पहन कर चावल, बादाम, मिश्री, फल, नैवद्य वगैरह के साथ श्री जिन मंदिर के लिए प्रस्थान करना चाहिए। मंदिर के पास पहुँच कर 'निसिही' कह कर मंदिर में प्रवेश करें और फिर प्रभु को हाथ जोडकर 'नमो जिणाणं' कहने के बाद 'निसिही' कह कर श्री भगवान के मूल गभारे की दाहिनी तरफ से तीन प्रदक्षिणा लगावें। प्रदक्षिणा देते समय 'रत्नाकर पच्चीसी' बोलना चाहिए। फिर प्रभु के सन्मुख खडे होकर भावना के लिए हाथ जोड-कर ये दोहे पढें —

प्रभु दरसन सुख सम्पदा, प्रभु दरसन नवनिद्ध। प्रभु दरसनथी पामिए, सरल पदारथ सिद्ध ॥१॥
भावे जिनवर पूजिए, भावे दीजे दान। भावे भावना भाविए, भावे केवल ज्ञान ॥२॥
जीवडा! जिनवर पूजिए, पूजाना फल होय। राजा नमै प्रजा नमै, आण न लोपे कोय ॥३॥
फूलडॉ केरा बागमां, बेठा श्री जिनराज। जिम तारामा चन्द्रमा, तिम सोहे महाराज ॥४॥
जग में तीरथ दोय बड़ा शत्रुंजय गिरनार। इण गिर ऋषभ समोसरे उण गिर नेम कुमार ॥५॥

विधि—पाट या पाटीया के ऊपर अक्षत याने चावल से ज्ञान, दर्शन और चारित्र छोटी-छोटी तीन ढगलियाँ करके नीचे के भाग में एक साथिया करके उस पर नैवद्य रखें। फिर ऊपर के आकार में चन्द्रमा की तरह सिद्ध-शिला का मंडाण मांडे।

(साथिया करते समय ये दोहे बोलें)

दर्शन ज्ञान चरित्र ना, आराधन था सार। सिद्ध शिलानी ऊपरे, हो मुझवास श्रीकार ॥१॥
चहुँगति भ्रमण संसार मां, जन्म-मरण जंजाल। पंचम गति विण जीव ने, सुख नहीं तिहुँकाल ॥२॥
अक्षत स्वस्तिक पूरतां, श्री जिन आगल सार। अक्षय फलने पामिये, अक्षय सुख दातार ॥३॥

विधि—'निसीही' कह कर तीन बार खमासमण देवे—'इच्छामि खमासमणो! वंदिउ जावणिज्जाए निसिही आए मत्थएण वंदामि।'

फिर दाहिना घुटना जमीन पर और बायां घुटना उठाकर बैठे और दोनों हाथ जोड़ कर नीचे का पाठ कहे—

"इच्छा कारेण संदिस्सह भगवन्! चैत्यवंदन करुं इच्छं।"

॥ चैत्यवंदन ॥

सिद्ध बुद्ध चौबीस जिन, ऋषभ अजित भगवान।
संभव अभिनन्दन सुमति, पद्म सुपार्श्व महान ॥

चन्द्र प्रभ सुविधि शीतल, श्री श्रेयास जिनेश।
वासुपुज्य प्रभु विमल जिन, अनन्त धर्म विशेष॥
शाति कुथु अर मल्लि विभु मुनि सुव्रत नमि नेम।
पार्श्व वीर हरि पूज्य ए नित वदू धर प्रेम॥

(अथवा)

जय! जय! नाभि नरिंद नन्द, सिद्धाचल मडल।
जय! जय! प्रथम जिणंद चद, भव दुक्ख विहडण॥
जय! जय! साधु सुरिंद वृन्द वदिअ परमेसर।
जय! जय! जगदानंद कद श्री ऋषभ जिणेसर॥
अमृत सम निज धर्मनो ए दायक जग मे जाण।
तुम पद पकज प्रीत धर निश दिन नमत कल्याण॥

(यहा अन्य चैत्य वदन भी बोल सकते हैं)

॥ ज किंचि ॥

ज किंचि नाम तित्थ सग्गे पायालि माणुसे लोए।
जाइ जिण - बिंबाइ ताइ सव्वाइ वंदामि॥

॥ नमोत्थुणं ॥

नमोत्थुणं, अरिहंताणं, भगवंताणं, आइगराणं, तित्थयराणं, संयसबुद्धाणं, पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवर पुंडरियाणं, पुरिसवर गंधहत्थिणं, लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोग हियाणं, लोग पईवाणं, लोग पज्जो अगराणं, अभय दयाणं, चक्खु दयाणं, मग्गदयाणं, सरण-दयाणं, बोहिदयाणं, धम्म दयाणं, धम्मदेसियाणं, धम्म नायगाणं, धम्म सारहीणं, धम्मवर-चाउरंत-चक्कवट्टीणं, अप्पडिहय वरनाणदंसणधराणं, विअट्ट छ उमाणं, जिनाणं जावयाणं, तिन्नाणं, तारयाणं, बुद्धाणं बोहियाणं, मुत्ताणं मो अगाणं, सव्वन्नूणं, सव्वदरिसिणं, सिव मयल-मरुअ-मणंत-मक्खय मव्वाबाह-मपुणरावित्ति सिद्धि गइ नामधेयं ठाणं संपत्ताणं नमो जिणाणं जिअ भयाणं।

जे अ अईया, सिद्धा जे अ भविस्संति अणागए काले ।
संपई अ वट्टमाणा सव्वे तिविहेण वंदामि ॥

॥ जावंति चेईआइं ॥

जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिअ लोए अ ।
सव्वाइं ताइं वन्दे, इह संतो, तत्थ संताइं ॥

॥ जावंति केवि साहू ॥

इच्छामि खमा समणो ! वंदिउ जावणिज्जाए निसिहियाए मत्थएण वंदामि ।

भगवन् ! जावंत के वि साहू भरहेर वय महाविदेहे अ ।

सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंड विरयाण ॥

विधि—"नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्य' ऐसा बोल कर यहाँ 'उवसग्ग हरं' स्तोत्र बोलें—

॥ उवसग्गहर स्तोत्र ॥

उवसग्गहरं पासं पासं वंदामि कम्मघण मुक्कं ।
विसहर विसनिन्नासं, मंगल-कल्लाण-आवासं ॥१॥

विसहर फुलिंगमंतं कंठे धारेइ जो सया मणुओ ।
तस्स गह रोग मारी दुट्ठ जरा जंति उवसामं ॥२॥

चिट्ठउ दूरे मंतो तुज्झ पणामो वि बहुफलो होइ ।
नरतिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्खदोगच्च ॥३॥

तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणि कप्पपायवब्भहिए ।
पावंति अविग्घेणं जीवा अयरामरं ठाणं ॥४॥

इअ संथुओ महायस भत्तिब्भरनिब्भरेण हि अएण।
ता देव दिज्ज बोहिं भवे भवे पासजिणचंद ॥५॥

(इसके बाद स्तवन पढ़ें)

॥ स्तवन ॥

जिन राज नाम तेरा राखूं हमारे घट में । टेर।
जाके प्रभाव मेरा, अज्ञान का अंधेरा, भाग्या भया उजेरा, राखू० ॥१॥
मुद्रा प्रमोदकारी, ऋषभजी तिहारी, लागत मोहे प्यारी, राखू० ॥२॥
सूरत तेरी रागे, देख्या विभावत्यागे, अध्यातम रूप जागे, राखू० ॥३॥
त्रिकोक्यनाथ तुम ही हम हे अनाथ गुन ही, करिये सनाथ हमही, राखू० ॥४॥
जिनजी तिहारी शाखे, जिन हर्ष सूरि भाखे, दिलमा जगां राखे, राखू० ॥५॥

अथवा

भज भज रे मन श्री भगवान आत्मा का होगा कल्याण।
दुनिया में बसेरा कुछ दिन का, सत्संग करो आचार्य मुनि का, भज भज० ।
इस दुनियाँ में न कोई किसी का, और तू भी है न किसी का, भज भज० ।
सब अपने-अपने स्वारथ के, भक्ति की धार नहाओ जमके, भज भज० ।
दिल पर ज्योति मधुर चमके, आँखों पै रोशनी दमके, भज भज० ।

आत्मा की कली कली खिले, भक्ति से ही मुक्ति मिले, भज भज० ।
काम-क्रोध, माया-मोह दुनियाँ में इसका ऊहापोह, भज भज० ।
मैं आया हूँ द्वार तेरे शक्ति दो प्रभु मेरे, भज भज० ।
'राय सुराणा' पावे ज्ञान, आत्मा का होवे कल्याण, भज भज० ।

(बाद में दोनों हाथ जोड करके मस्तक में अन्जली लगाकर 'जय वीयराय' पढे)

॥ जय वीयराय ॥

जय ! वीयराय जगगुरु ! होउ मम तुह प्पभावनो भयव !
भवनिव्वेओ मग्गाणुसारिआ इट्ठफल सिद्धि ॥ १ ॥
लोग विरुद्धच्चाओ गुरु जनपूआ परत्थ करण च ।
सुहगुरु जोगो तव्वयण सेवणा आभवमखडा ॥ २ ॥

(फिर खडे होकर हाथ जोडे बोले)

॥ अरिहत चेइ आण ॥

अरहत चेइ आण करेमि काउस्सग्ग । वदणवत्ति आए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्तिआए, बोहिलाभवत्तिआए, निरुवसग्ग वत्तिआए, सिद्धाए मेहाए धीईए, धारणाए, अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग ।

॥ अन्नत्थ ऊससिएणं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहमेहिं खेल संचालेहिं, सुहमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं। एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहाहिओ, हुज्जमे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(यहां एक नवकार का कार्योत्सर्ग करें)

णमो अरिहंताणं। णमो सिद्धाणं। णमो आयरियाणं।
णमो उवज्झायाणं। णमो लोए सव्व साहूणं ॥

एसो पंच णमुक्कारो, सव्वपाव पणासणो। मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं।

बाद में कार्योत्सर्ग पार 'णमो अरिहंताणं' कहकर 'नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः' बोलने के बाद स्तुति पाठ करें—

॥ स्तुति ॥

अष्टापदे श्री आदि जिनवर वीर जिन पावापुरे।
वासुपूज्य चम्पा नयरी सिद्धा नेम रेवा गिरिवरे ॥

सम्मेद शिखरे बीस जिनवर मोक्ष पहुँता मुनिवरूँ ।
चौबीस जिनवर नित्य वन्दूँ सयल सये सुख करूँ ॥

इसके बाद खमासमण देकर नवकारसी आदि का यथाशक्ति पच्चक्खाण करें ।

॥ नवकारसी पच्चक्खाण ॥

उग्गए सूरे नमुक्कार सहिअं मुट्ठिसहिअं पच्चक्खाइ चउव्विहंपि आहारं—असणं, पाणं, खाइमं, साइमं अन्नत्थणा भोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं वोसिरामि ।

—❀—

जिनेश्वर स्तोत्र

सर्वज्ञं त्यक्त रागं प्रचुर गुण भरं सर्वलोकेषु वन्द्यम् ।
विम्वानन्दं सुमान्यं परम पद धरं दिव्यरूपं जिनेन्द्रम् ॥
सौम्याऽकार प्रसन्नं जगति हितकरं शान्त मुद्राऽभिरामम् ।
आनन्दाब्धि सुधर्म्यं सुखद जिनवरं नौमि तं पूज्यपादम् ॥

अथ शत्रुंजय तीर्थ स्तोत्रम्

पूर्णानन्दमयं महोदयप्रदं कैवल्य चिद्दृङ् मयम् ।
रूपातीतमयं स्वरूप रमणं स्वाभाविक श्रीमयम् ॥
ज्ञानोद्योतमयं कृपारस मयं स्याद्वाद विद्यालयम् ।
श्री सिद्धाचल तीर्थ राजमनिशम् वन्देऽहमादीश्वरम् ॥

अथ श्री जिन पूजा सत्

प्रथम श्री मज्जिन पूजा करने वाले अच्छे स्थान में स्नान कर चोटी के केश गाँठ शुद्ध वस्त्र पहन के उत्तरासङ्ग कर मुखकोश बाँधे। पीछे इस मंत्र से वासक्षेप तीन-तीन बार मंत्र के अष्ट द्रव्य को शुद्ध करें। सोही "आचार दिनकर" से लिखते हैं।

ओम् त्रसरूपोहँ संसारिजीवः सुत्रासनः सुमेधा एकचित्तो निरवद्यार्हत्पूजने निर्व्यथो निष्पापो भूयासं निरुपद्रवो भूयासं सत्संश्रिता अन्येपि जीवा निरवद्यार्हत्पूजने निर्व्यथाः निष्पापाः भूयासुः स्वाहा ।

[यह मंत्र पढ़कर अपने ललाट में तिलक करें]

॥ अथ जल मन्त्र ॥

ओम् आपो अप्कायाः एकेंद्रिया जीवा निरवद्यार्हत्पूजाया निर्व्यथाः निष्पापाः शुभगतयः सन्तु न मेस्तु संघट्टनहिंसापापमर्हदर्चने स्वाहा ।

॥ चंदन पुष्प धूप फल अक्षत शुद्धि मन्त्र ॥

ओम् वनस्पतयो वनस्पतिकाया जीवा एकेंद्रिया निरवद्यार्हत्पूजाया निर्व्यथाः निष्पापाः शुभगतयः सन्तु न मेस्तु संघट्टनहिंसापापमर्हदर्चने स्वाहा ।

॥ अग्नि और दीपक शुद्धि मन्त्र ॥

ओम् अग्नयोऽग्निकाया जीवा एकेंद्रिया निरवद्यार्हत्पूजाया निर्व्यथाः सन्तु निरपायाः सन्तु शुभगतयः सन्तु न मेस्तु संघट्टनहिंसापापमर्हदर्चने स्वाहा ।

❀ श्री जिनाय नमः ❀

॥ स्नात्र पूजा ॥

अथ मङ्गलाचरणम्

नमो अरिहंताणं। नमो सिद्धाणं। नमो आयरियाणं। नमो उवज्झायाणं। नमो लोए सव्वसाहूणं। एसो पंचणमुक्कारो, सव्वपावप्पणासणो। मंगलाणं च सव्वेसि, पढमं हवइ मंगलं॥

पांखडी गाथा—चौंतीसैं अतिशए जुओ। वचनातिशय संजुत्त॥
सो परमेसर देखि भवि। सिंघासण संपत्त॥ १॥

ढाल—सिंहासन बैठा जगभाण। देखि भवियण गुण मणि खाण॥
जे दीठें तुम निम्मल झाण। लहिये परम महोदय ठाण॥ १॥

कुसुमांजलि मेलो श्री आदि जिणन्दा॥ तोरा चरण कमल चोबीस श्री पूजोरे चोबीस सोभाग। चोबीस वैरागी चोबीस जिणंदा॥ कुसुमांजलि मेलो श्री आदि जिणन्दा।

[हाथ में कुसुमांजलि लेकर श्री चरणों में टीकी दीजिए]

गाथा—जो नियगुण पज्जव रम्यो। तसु अनुभव एगत्त॥ सुह पुग्गल आरोपता। ज्योति सुरंग निरत्त॥ २॥

ढाल—जो निज आतम गुण आनन्दी। पुग्गल संग जेह अफंदी॥
जे परमेश्वर निज पद लीन। पूजो प्रणमो भव्य अदीन॥

कुसुमांजलि मेलो श्री शांति जिणंदा॥ तोरा चरण कमल चोवीस, पूजीरे चोवीस, सोभागी चोवीस, वैरागी चोवीस, जिणंदा॥ कुसुमांजलि मेलो श्रीशांति जिणंदा॥ २॥

[घुटने मे टीकी दीजिए]

गाथा—निम्मल नाण पयासकर। निम्मल गुण संपन्न॥ निम्मल धम्मो वयस कर। सो परमप्पा धन्न॥ ३॥

ढाल—लोकालोक प्रकाशक नाणी। भवि जण तारण जेहनी वाणी॥
परमानंद तणी नीसाणी। तसु भगतें मुझ मति ठहराणी॥

कुसुमांजलि मेलो श्री नेमि जिणंदा। तोरा चरण कमल चोवीस, पूजीरे चोवीस, सोभागी चोवीस, वैरागी चोवीस जिणंदा॥ कुसुमांजलि मेलो श्री नेमि जिणन्दा॥ ३॥

[कन्धे पर टीकी दीजिए]

गाथा—जे सिद्धा सिज्जन्ति जे। सिज्जिस्सन्ति अणंत ॥ जसु आलंबन ठविय मन। सो सेवो अरिहंत ॥ ४ ॥

ढाल—शिव सुख कारणजेह त्रिकालें। सम परिणामें जगत निहालें ॥
उत्तम साधन मार्ग दिखालें। न्द्रादिक जसु चरण पखालें ॥
कुसुमांजलि मेलो श्री पार्श्व जिणन्दा, तोरा चरण कमल चौबीस,
पूजोरे चोवीस, सोभागी चोवीस, वैरागी चोवीस जिणन्दा ॥
कुसुमांजलि मेलो श्री पार्श्व जिणन्दा ॥ ४ ॥

[मस्तक पर टीकी दीजिए]

गाथा—सम्मदिट्ठी देसजय। साहू साहुणी सार ॥ आचारिज उवझाय मुणि। जो निम्मल आधार ॥५॥

चोविह संघे जे मन धार्यो। मोक्ष तणों कारण निरधार्यो ॥
विविह कुसुम वर जात गहेवी। तसु चरणै प्रणमन्ति ठवेवी ॥
कुसुमांजलि मेलो श्रीवीर जिणन्दा, तोरा चरण कमल चोवीस,
पूजोरे चोवीस, सोभागी चोवीस, वैरागी चोवीस जिणन्दा ॥
कुसुमांजलि मेला श्रीवीर जिणंदा ॥ ५ ॥

[ललाट में टीकी दीजिए]

नमोर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्यः ॥

(पीछे चमर हाथ में लेकर इस प्रकार पढे)

वस्तु— सयल जिनवर सयल जिनवर नमिअ मनरंग । कल्लाणकविह संथविअ ॥
करिय सुजम्म सुपवित्त सुन्दर । सय इक सत्तरि तित्थकर ।
इक्क समें विहरत महियल । चवण समय इकवीस जिण ।
जन्म समय इकवीस । भत्तिय भावें पूजिया । करो सथ सुजगीस ॥१॥

॥ एक दिन अचिरा हुलरावती—ए देशी ॥

भव तीजे समकित गुण रम्या । जिन भक्ति प्रमुख गुण परिणम्या ॥
तजि इन्द्रिय सुख आससना । करि थानक वीसनी सेवना ॥
अतिराग प्रशस्त प्रभावता । मन भावना एहवी भावता ॥
सवि जीव करूँ शासन रसी । इसि भाव दया मन उल्लसी ॥
लहि परिणाम एहवु भलु । निपजावी जिनपद निरमलु ॥
आऊ बंध विच इक भव करी । श्रद्धा संवेग थी थिर धरी ॥

तिहांथीं चविय लहैं नर भव उदार। भरतें जिम ऐरवतेज सार ॥
महा विदेह विजय प्रधान। मझ खंडे अवतरै जिन निधान ॥
ढाल—पुण्यें सुपना ए देखें। मन में हर्ष विशेषे ॥
गजवर उज्जल सुन्दर। निर्मल वृषभ मनोहर ॥
निर्भय केसरो सिंह। लखमी अतिहि अबीह ॥
अनुपम फूलनी माल। निर्मल शशि सुकमाल ॥
तेज तरण अति दीपै। इन्द्र ध्वजा जग जीपै ॥
पूरण कलस पंडूर। पदम सरोवर पूर ॥
इग्यार में रयणायर। देखे माताजी गुण सायर ॥
बारमें भुवन विमान। तेरमें रत्न निधान ॥
अग्नि शिखा निरधूम। देखें माताजी अनुपम ॥
हरखी रायने भाखे। राजा अर्थ प्रकाशे ॥
जगपति जिनवर सुखकर। होस्यें पुत्र मनोहर ॥
इन्द्रादि जसु नमस्यें। सकल मनोरथ फलस्यें ॥

वस्तु—पुण्य उदय पुण्य उदय आना जिण नाह। माता तब रयणी समें देखि सुपन हरपत जागिय। सुपन रहीं निज कतने सुपन अरथ सांभलो सौभागिय।
त्रिभुवन तिलक महा गुणी। होसे पुत्र निधान॥
इन्द्रादिक जसु पय नमि। करसें सिद्ध विधान॥

[इसके बाद हाथ में चावल लेकर खडे रहें]

॥ ढाल चंद्रा उल्लालानी ॥

सोहंम पति आसन कंपियो। देई अवधें मन आणंदियो॥
मुझ आतम निर्मल करण काज। भव जल तारण प्रगट्यो जिहाज॥
भव अटवि पारग सत्थवाह। केवल नाणाइय गुण अगाह॥
शिव साधन गुण अंकुर जेह। कारण उलट्यो आपाढि मेह॥
हरखे विकसै तव रोमराय। वलयादिकमां निज तनु न माय॥
सिंहासन थी उठ्यो सुरिंद। प्रणमन्तो जिण आनन्द कन्द॥
सग अडपय पमुहा आवि तत्थ। करि अञ्जलि प्रणमिय मत्थ सत्थ॥

मुख भाखें ए खिण आज सार। तियलोय पहु दीठो उदार॥
रें रे निसुणों सुर लोय देव। विषयानल तापित तनु समेव॥
तसु शांति करण जलधर समान। मिथ्या विष चूरण गरुड़वान॥
ते देव सकल तारण समत्त्थ। प्रगट्यो तसु प्रणमी हुवा सनत्त्थ॥
इम जम्पी सक्रस्तव करेवि। तव देव देवी हरखै सुणेवि॥
गावें तव रंभा गीत गान। सुर लोक हुवो मंगल निधान॥
नर खेत्रें आरज वंश ठाम। जिनराज वधैं सुर हर्ष धाम॥
पिता माता घरे उच्छव अलेख। जिन शासन मंगल अति विशेष॥
सुरपति देवादिक हर्ष संग। संयम अरथी जनने उमंग॥
शुभ वेलां लगने तीर्थ नाथ। जनम्यां इंद्रादिक हर्ष साथ॥
सुख पाम्यां त्रिभुवन सर्व जीव। वधाई वधाई थई अतीव॥

(फूल अक्षत से वधावे, तीन प्रदिक्षणा देवे। शक्रस्तव कहे। पीछे केशर का हाथ में साथिया करके धूप रखे और चैत्यवंदन करें। इसके बाद नमोत्त्थुणं का पाठ कह कर सव्वे तिविहेण वंदामि कहें, हाथ में स्वस्तिक करें, मौलि बांधे और फिर कलश पढ़ें।)

॥ श्रीशांति जिननों कलश कहिसुं—ए देशी ॥

त्रोटक— श्रीतीर्थपतिनों कलश मज्जन गाइये सुखकार ।
नर खेत मंडन दुह विहण्डण भविक मन आधार ॥

तिहा राव राणा हर्ष उच्छव थयो जग जय कार । दिसि कुमरि अवधि विशेष जाणीं लह्यो हर्ष अपार ॥
निय अमर अमरी सग कुमरी गावती गुण छंद । जिन जननि पासे आवि पोंहती गहगही आणन्द ॥
हे माय तैं जिनराज जायो शुचि वधायो रम्भ । अम जम्म निम्मल करण कारण करिस सुइय कम्म ॥
तिहा भूमि शोधन दीप दर्पण वाय विंजण धार । तिहाकरिय कन्लीगेह जिनवर जननी मज्जनकार ॥
वर राखडी जिन पाणि बाँधी दिये इम आसीस । जुग कोड़ कोडी चिरंजीवो धर्म दायक ईश ॥

॥ ढाल इक निसानी ॥

जग नायकजी त्रिभुवन जन हितकार ए । परमातमजी चिदानन्द घन सार ए ॥
जिन रयणीजी दश दिस उज्जलता धरैं । शुभ लगनेजी ज्योतिष चक्रते सञ्चरैं ॥
जिन जनम्याजी जिन अवसर माता घरैं । तिण अवसरजी इन्द्रासन पिण थरहरैं ॥

त्रोटक— थरहरें आसन इन्द्र चिंतें कवण अवसर ए बण्यो।
जिन जन्म उच्छव काल जाणीं अतिही आनंद ऊपन्यो॥
निज सिद्ध संपति हेतु जिनवर जाणि भगते ऊमह्यो।
विकसंत वदन प्रमोद वधते देव नायक गहगह्यो॥

ढाल— तव सुरपतिजी घंटानाद करावए। सुर लोकैं जी घोषणा एह दिरावए॥
नर खेत्रैंजी जिनवर जन्म हुवो अछै। तसु भगतैंजी सुरपति मन्दर गिर गछै।

त्रोटक— गछै मन्दिर शिखर ऊपर भुवन जीवन जिन तणीं।
जिन जन्म उच्छव करण कारण आवज्यो सवि सुर गणीं॥
तुम शुद्ध समकित थास्ये निर्मल देवाधिदेव निहालतां।
आपणा पातिक सर्व जासे नाथ चरण पखालतां॥

ढाल— इम सांभलिजी सुरवर कोड़ी बहु मिली। जिन वन्दनजी मंदर गिर साहमी चली॥
सोहम पतिजी जिन जननी घर आविया। जिन माताजी वंदी स्वामी वधाविया॥

त्रोटक— वधाविया जिनवर हर्ष बहुलैं धन्य हूँ कृत पुण्य ए।
त्रैलोक्य नायक देव दीठो मुझ समो कुण अन्य ए॥

हे जगत् जननी पुत्र तुमचो मेरु मज्जन वर करी।
उच्छंग तुमचे थलिय थापित आतमा पुण्ये भरी॥

ढाल—सुर नायक जी जिन जिन कर कमल ठव्या। पाचरूपेजी अतिशय महिमायें स्तव्या।
नाटक विध जी तत्र बत्तीस आगल वहे। सुर कोडी जी जिन दरशनयीं ऊमहे॥

त्रोटक— सुर कोड कोडी नाचती वलि नाथ शुचि गुण गावती।
अपछरा कोडी हाथ जोडी हाथ भाव दिखावती॥
जय जयो तूं जिनराज जग गुरु एम दे आसीस ए।
अम त्राण शरण आधार जीवन एक तू जगदीस ए॥

ढाल—सुर गिरवरजी पाडुक वनम चिहुँ दिसें। गिरि शिल पर जी सिंहासन सासय वसे॥
तिहा आणीजी शक्रे जिन खोले ग्रह्या। चउसठें जी तिहा सुरपति आवी रह्या॥

त्रोटक— आविया सुरपति सर्व भगतें कलश श्रेणि बणावए।
२१ — सिद्धार्थ पमुहा तीर्थ औषधि सर्व वस्तु अणावए॥
अच्चुयपति तिहा हुकुम कीनों देव कोडा कोडिनें।
जिन मज्जनारथ नीर ल्यावो सर्व सुर कर जोडिनें॥

[जलका कलश लेकर खड़े रहें और पढ़ें]

॥ शांतिनें कारणे इन्द्र कलशा भरे—ए देशी ॥

ढाल— आतम शाधन रसी देवकोड़ी हसी। उल्लसीनें धसी खीर सागर दिसी ॥
पउमदह आदि दह गंग पमुहा नई। तीर्थ जल अमल लेवा भणी ते गई ॥
जाति अड़ कलश करि सहस अठोत्तरा। छत्र चामर सिंहासणे शुभतरा ॥
उपगरण पुष्फ चंगेरि पमुहा सवें। आग में भासिया तेम आणि ठवें ॥
तीर्थ जल भरिय करि कलश करि देवता। गावता भावता धर्म उन्नतिरता ॥
तिरिय नर अमरनें हर्ष उपजावता। धन्य अम शक्ति शुचि भक्ति इम भावता ॥
समकितें बीज निज आतम आरोपता। कलश पाणी मिसै भक्ति जल सींचता ॥
मेरु सिहरोवरे सर्व आव्या वही। शक्र उच्छङ्ग जिन देखि मन गहगही ॥

गाथा—हंहो देवा अणाइ कालो। अदिट्ठपुव्वो तिलोय तारणो ॥
तिलोय बंधू मिच्छत मोह विद्धंसणो। आणाइ तिह्णा विणासणो ॥
॥ देवाहिदेवो दिट्ठवो हिअण्कामेहि ॥

ढाल—एम पभणंत वण भुवन जोइसरा। देव वेमाणिया भत्ति धम्मायरा ॥
केवि कप्पट्ठिया केवि मित्ताणुगा। केवि वर रमण वयणेण अइ उच्छुगा ॥

वस्तु—तत्थ अच्चुय तत्थ अच्चुय इन्द्र आदेश। कर जोडी सव देवगण लेइ कलश आदेश पामिय ।। अद्भुत रूप सरूप जुय करण एह पुन्नंत सामिय। इन्द्र कहे जगतारणो पारग अम्ह परमेस। नायक दायक धम्मनिधि करिये तसु अभिषेक ।।

[जल की थोडी धारा दें]

।। तीर्थ कमलवर उदक भरीने पुष्कर सागर आवे—ए देशी ।।

ढाल—
पूर्ण कलश शुचि उदकनी धारा, जिनवर अगें नामे।
आतम निर्मल भाव करता, वधते शुभ परिणामे ।।
अच्युतादिक सुरपति मज्जन, लोकपाल लोकन्त।
सामानिक इ द्राणि पमुहा, इम अभिषेक करंत ।। पू० ।

[चरणों पर थोडा जल चढाना]

गाथा—तव ईशाण सुरिन्दो, सक्क पभणेइ करिय सुपसाउ।
तुम अंके महनाहो, खिणमित्त अम्ह अप्पेह ।।
ता सक्किदो पभणेइ, साहम्मि वच्छलम्मि वहुलाहो।
आणा एव तेण गिन्हइ होउ कयत्था भो ।।

[समस्त कलश-जल से स्नान करायें]

ढाल—

सोहम सुरपति वृषभ रूप करि न्हवण करे प्रभु अंगे।
करिय विलेपण पुष्फमाल ठवि वर आभरण अभंगे ॥ सो० १ ।

तव सुरवर बहु जय-जय रव कर नाचे धरि आणन्द।
मोक्ष मारग सारथ पति पाम्यों भांजस्युं हिव भव फन्द ॥ सो० २ ॥
कोड़ि बत्तीस सोवन्न उवारी वाजंते वरनाद।
सुरपति संघ अमर श्री प्रभु ने जननी ने सुप्रसाद ॥
आणि थापी एम पयंपे अम्ह निस्तरिया आज।
पुत्र तुमारो धणिय हमारो तारण तरण जिहाज ॥ सो० ३ ॥
मात जतन करि राखज्यो एहने तुम सुत हम आधार।
सुरपति भक्ति सहित नन्दीश्वर करे जिन भक्ति उदार ॥ सो० ४ ॥
निय-निय कप्प गया सहु निर्ज्जर कहता प्रभु गुण सार।
दीक्षा केवल ज्ञान कल्याणक इच्छा चित्त मझार ॥ सो० ५ ॥
खरतर गच्छ जिण आणा रंगी राज सागर उवझाय।
ज्ञान धर्म दीपचंद सुपाठक सुगुरु तणें सुपसाय ॥

देवचंद निज भक्ते गायो जन्म महोच्छव छंद।
बोध बीज अंकुरो उलस्यो संघ सकल आणंद ॥ सो० ६ ॥

[अभिषेक के बाद शुद्ध जल से प्रक्षाल अंग लूहणा करना चाहिए]

॥ राग- वेलावल ॥

इम पूजा भगतें करो, आतम हित काज। तजिय विभाव निज भावना, रमता शिव राज। इम० १॥
काल अनन्तें जे हुआ, होस्यें जेह जिणंद। संपई श्रीमंधर प्रभु, केवल नाण दिणन्द ॥ इम० २ ॥
जन्म महोच्छव इण परे, श्रावक रुचिवंत। विरचै जिन प्रतिमा तणों, अनुमोदन खंत ॥ इम० ३ ॥
देवचन्द जिन पूजना, करता भव पार। जिन पडिमा जिन सारखी, कही सूत्र मझार ॥ इम० ४ ॥

॥ इति स्नात्र-पूजा विधि सम्पूर्णम् ॥

— ❀ —

॥ अथ अष्टप्रकारि पूजा ॥



॥ अंग पूजा ॥

॥ अथ जल पूजा ॥

दुहा ॥ गंगा मागध क्षीरनिधि, औषध मिश्रित सार।
कुसुमे वासित शुचि जले, करो जिन स्नात्र उदार ॥

ढाल—मणि कनकादिक अड़विध करि भरि कलश सफार।
शुभ रुचि जे जिनवर नमें तसु नहीं दुरिय प्रचार ॥
मेरु शिखर जिम सुरवर जिनवर न्हवण अमान।
करता वरता निज गुण समकित वृद्धि निधान ॥ १ ॥

छन्द— हर्ष भरि अपसरा वृन्द आवे। स्नात्र करि एम आसीस भावे ॥
जिहा लगे सुरगिरी जंबुदीवो। अमतणानाथ जीवो तु जीवो ॥ ३ ॥

श्लोकः—विमलकेवलभासनभास्कर । जगति जंतुमहोदयकारण ॥
जिनवर बहुमानजलौघतः शुचिमनः स्नपयामि विशुद्धये ॥ १ ॥

ओं ह्रीं परमपरमात्मने अनन्तानन्तज्ञानशक्तये जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय जल यजामहे स्वाहा ॥ १ ॥ इति जल पूजा ॥

[दाहिने चरण पर अङ्ग लूणा रखकर जल चढावें]

॥ अथ चन्दन पूजा ॥

दुहा ॥ बावना चन्दन कुमकुमा। मृग मद नें घनसार ॥
जिन तनु लेपै तसु टले। मोह सन्ताप विकार ॥१॥

सकल सताप निवारण तारण सहु भविचित्त। परम अनीहा अरिहा तनु चरचो भवि नित्त ॥
निज रूपे उपयोगी धारी जिन गुण गेह। भाव चन्दन सुद्ध भावथी टाले दुरति अछेह ॥२॥

चाल— जिन तनु चरचतां सकल नाकी। कहै कुग्रह उष्णतां आज थाकी॥
सफल अनिमेषता आज म्हांकी। भव्यता अह्म तणी आज पाकी॥३॥

श्लोकः— सकलमोहतमिश्रविनाशनं। परमशीतलभावयुतं जिनं॥
विनयकुंकुमचंदनदर्शनैः सहजतत्वविकाशकृतेर्च्चये॥१॥

ओं ह्रीं परमपरमात्मने अनन्तानन्तज्ञानशक्तये जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय चन्दनं यजामहे स्वाहा॥ २॥

॥ इति चंदन पूजा॥

[केशर चन्दन चढ़ावें]

॥ अथ नव अङ्ग भाव पूजा॥

दुहा॥ पर उपगारी चरणयुग अनन्त शक्ति स्वयमेव।
यातें प्रथम पूजिये आतम अनुभव सेव (चरणों में टीकी)॥ १॥

जानु पूजा दूसरी, समाधि भूमिका जान।
आतम साधन ज्ञान ले, शुद्ध दशा पहिचान॥ (गोड़ में टीकी)॥ २॥

कर पूजा जिन राज को, निचे सम्मच्छरी दान।
ते कर मुझ मस्तक ठवू पहुँचे पद निरवाण ॥ (हाथों मे टीकी) ॥ ३ ॥

भुज बल शक्ति जानके, पूजाकरूँ चित लाय।
रागादि मन हटाय के, आतम गुण दरसाय ॥ (कधों मे टीकी) ॥ ४ ॥
सिर पूजा जिन राज की, लोक शिरोमणि भाव।
चउगति गमन मिटायके, पचम गति सम भाव ॥ (मस्तक मे टीकी) ॥ ५ ॥
लिलवट पूजा सार है, तिलक विधि विश्राम।
वदन कमल वाणी सुनें, पहुँचे निज गुण धाम ॥ (ललाट मे टीकी) ॥ ६ ॥
कठ पूजा है मातमी, वचनातिशय वृद।
सप्त भेद पयचिश श्रुत, अनुभव रस नो कद ॥ (कठ मे टीकी) ॥ ७ ॥
हृदय कमलनी पूजना, सदा वसो चितमाह।
गुण विवेक जागे सदा, ज्ञान कला घट छाय ॥ (हृदय मे टीकी) ॥ ८ ॥
नाभी मडल पुज के, षोडश दल को भाव।
मन मधुकर मोही रह्यो, आनन्द घन हरपाय ॥ (नाभि मे टीकी) ॥ ९ ॥

॥ पुनः - दुहा ॥

जल भरि संपुट पत्रमां, युगलिक नर पूजंत। ऋषभ चरण अंगुष्ठडे, दायक भवजल अन्त ॥१॥
जानु वले काउसग रह्या, विचर्‌या देश विदेश। खड़ा-खड़ा केवल लह्या, पूजो जानु नरेश ॥२॥
लोकांतिक वचने करी, वरस्या वरसी दान। कर कंडे प्रभु पूजना, पूजो भवि बहुमान ॥३॥
मान गयूं दो अंश थी, देखी वीर्य अनन्त। पूजा वलें भवजल तर्‌या, पूजो खंध महंत ॥४॥
सिद्ध शिला गुण ऊजली, लोकांतिक भगवन्त। वसिया तिण कारण वही, शिर शिखा पूजन्त ॥५॥
तीर्थङ्कर पद पुण्य थी, त्रिभुवन जिन सेवन्त। त्रिभुवन तिलक समा प्रभु, भाल तिलक जगवंत।६।
सोल पहर देई देशना, कंठ विवर वरतूल। मधुर ध्वनि सुर नर सुने, तिम गले तिलक अमूल।७।
हृदय कमल उपशम वलें, बाल्यो रागनें द्वेष। हेम दहै वन खंडने, हृदय तिलोक संतोष ॥८॥
रत्नत्रय गुण ऊजली, सकल सुगुण विश्राम। नाभि कमलनी पूजना, करता अविचल धाम ॥९॥
उपदेशक नवतत्वना, तिम नव अङ्ग जिनन्द। पूजो बहु विध भाव थी, कहे सहु वीर मुनिंद ॥१०॥

॥ इति नव अङ्ग भाव पूजा ॥

॥ अथ पुष्प पूजा ॥

शतपत्री वर मोगरा, चम्पक जाइ गुलाव।
केतकी दमणो वोलसिरि, पूजो जिन भरी छाव ॥१॥

ढाल—अमल अखण्डित विकसित सुभ सुमनी घन जाति, लावीनो टोडर ठवो अङ्गी रचो वहुभाति।
गुण कुसुमें निज आतम मंडित करना भव्य, गुणरागी जड़त्यागी पुष्प चढावो नव्य ॥२॥

चाल— जगधणी पूजता त्रिविध फले, सुरवरा ते गिणे क्षण अमूले।
लन्ति घर मानवा जिनपद पूजे, तसुतणा पाप संताप धूजे ॥ ३ ॥

श्लोक— विकचनिर्मलशुद्धमनोरमैः विशदचेतनभावसमुद्भवैः ।
सुपरिणामप्रसूनघनैर्नवैः परमतत्त्वमय हि यजाम्यहम् ॥१॥

ओं ह्रीं परमपरमात्मने अनन्तानन्तज्ञानशक्तये जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय पुष्पं-यजामहे स्वाहा ॥ २ ॥

॥ इति पुष्प पूजा ॥

[पुष्प चढावें]

॥ अग्रपूजा ॥

॥ अथ धूप पूजा ॥

कृष्णागर मृगमद तगर, अम्बर तुरक लोबान।
मेल सुगन्ध घनसार घन, करो जिननेधूपदान ॥ १ ॥

ढाल— धूपवटी जिम महमहे, तिम दहे पातिक वृन्द।
आर्ति अनादिनी जावै, पावै मन आनन्द।
जे जन पूजै धूपै, भवकूपे फिर तेह। नावै ध्रुवधर, आवै सुक्ख अछेह ॥ २ ॥

चाल— जिनघरे वासतां धूपपूरै, मिच्छत दुर्गन्धता जाई दूरै।
धूप जिम सहज ऊर्द्धगत स्वभावे, कारिका उच्चगति भाव पावै ॥ ३ ॥

श्लोक— सकलकर्म्ममहेंधनदाहनं, विमलसंवरभावसुधूपनम्।
अशुभपुद्गलसंगविवर्जितं जिनपतेः पुरतोस्तु सुहर्षितः ॥१॥

ओं ह्रीं परमपरमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय धूपं यजामहे स्वाहा ॥ ४ ॥

॥ इति धूप पूजा ॥

[धूप अगरवत्ती खेवै]

|| अथ दीपक पूजा ||

मणिमय रजत ताम्रना, पात्र करी घृत पूर।
वत्ती सूत्र कसुवनी, करो प्रदीप सनूर । १ ।

ढाल— मंगल दीप वधावो गावो जिन गुणगीत, लोप थकी जिम आलिका मालिका मङ्गलनीत।
दीपतणी शुभज्योती द्योती जिन मुखचन्द, निरखी हरखो भविजन जिम लहो पूर्णानन्द । २ ।

चाल— जिन गृहे दीपमाला प्रकासैं, तेहती तिमिर अज्ञान नासैं।
निजघटे ज्ञानज्योति विकासे, तेहथी जगतणा भाव भासे ॥ ३ ॥

श्लोक— भविक निर्मल बोधविकाशक, जिनगृहे शुभदीपकदीपन।
सुगुणरागविशुद्धसमन्वितं, दधतु भावविकाशकृते जनाः ॥१॥

ओं, ह्रीं परमपरमात्मने अनन्तानन्तज्ञानशक्तये जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्री मज्जिनेन्द्राय दीपं यजामहे स्वाहा ॥ ४ ॥

|| इति दीपक पूजा ||

[मङ्गलदीप चढावै]

॥ अथ अक्षत पूजा ॥

अक्षत अक्षत पूरसु', जे जिन आगे सार।
स्वस्तिक रचतां विस्तरै, निजगुण भर विस्तार ।१।

ढाल— उज्जल अमर अखंडित मंडित अक्षत चङ्ग, पुञ्जत्रय करो स्वस्तिक आस्तिक भावे रङ्ग ।
निज सत्ता ने सन्मुख उनमुख भावे जेह, ज्ञानादिक गुणठावे भावे स्वस्तिक एह ॥२॥

चाल— स्वस्तिक पूरतां जिनप आगे, स्वस्ति श्री भद्र कल्याण जागे।
जन्म जरा मरणादि असुभ भागे, नियत शिव सर्व रहै तासु आगे ॥३॥

श्लोक— सकलमंगलकेलिनिकेतनं, परममंगलभावं मयं जिनं ।
श्रयति भव्यजना इति दर्शयन्, दधतु नाथपुरोक्षतस्वस्तिकं ॥१ ।

ओं ह्रीं परमपरमात्मने अनन्तानन्तज्ञानशक्तये जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्री मज्जिनेन्द्राय अक्षतं यजामहे स्वाहा ॥ ६ ॥

॥ इति अक्षत पूजा ॥

[अखंड चावल चढावे]

॥ अथ नैवेद्य पूजा ॥

सरस सुचि पकवान बहु, शालि दालि घृतपूर।
धरो नैवेद्य जिन आगले, क्षुधा दोष तसु दुर ॥ १ ॥

लपनश्री घर घेवर मधुतर मोतीचूर, सींहकेसरिया सेविया दालिया मोदक पूर।
साकर द्राख सीघोड़ा भक्ति व्यञ्जन घृतसन, धरो नैवेद्य जिन आगले जिम मिले सुख अनवद्य ।२।

ढोवता भोज्य पर भाव त्यागे, भविजना निज गुण भोज्य भागे।
अमहभगि अम्हतणो सरूप भोज्य, आपज्यौ तातजी जगत पूज्य ॥ ३ ॥

श्लोक— सकलपुद्गलसंगविवर्जनं सहजचेतनभावविलासकं।
सरसभोजननव्यनिवेदनात्, परमनिर्वृतिभागमहं स्पृहे ॥१॥

ॐ ह्रीं परमपरमात्मने अनन्तानन्तज्ञानशक्तये जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्री मज्जिनेन्द्राय नैवेद्यं यजामहे स्वाहा ॥ ७ ॥

॥ इति नैवेद्य पूजा ॥

[मिठाई पकवान चढावे]

॥ अथ फल पूजा ॥

पक्व बीजोरु जिन भेट करै, ठवतां शिवपद देइ।
सरस मधुर रस फल गिणों इह जिन भेट करइ॥ १ ॥

ढाल— श्रीफल कदली सुरंग नारंगी आंबा रार, अजीर वजीर दाड़िम करणा पट्बीज सफार।
मधुर सुखादिक उत्तम लोक आनंदित जेह, वर्ण गंधादिक रमणीक बहुफल ढोवै तेह ।२।

चाल— फलभर पूजतां जगत स्वामी, मनुजगति ते लहै सफल पामी।
सकल मनुष्येय गतिभेद रंगै, ध्यावतां फल समाप्ति प्रसंगै ॥ ३ ॥

श्लोक— कटुककर्मविपाकविनाशनं, सरसपक्वफलव्रजढौकनं।
वहति मोक्षफलस्य प्रभोः पुरः कुरुत सिद्धिफलाय महाजनाः ॥१॥

ओं ह्रीं परमपरमात्मने अनन्तानन्तज्ञानशक्तये जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्री मज्जिनेन्द्राय फलं यजामहे स्वाहा ॥ ८ ॥

॥ इति फल पूजा ॥

[श्रीफल सुपारी नीला फल प्रमुख चढावै]

॥ अथ अर्घ पूजा ॥

दोहा—इम अडविधि जिन पूजना, विरचै जे थिर चित्त।
मानवभव सफलो करै, वाधै समकित वित्त ॥ १ ॥

ढाल—अगणित गुणमणि आगर नागर वन्दित पाय, श्रुतधारी उपगारी श्री ज्ञानसागर उवज्झाय।
तासु चरणरज सेवक मधुकर पय लयलीन, श्रीजिन पूजा गाई जिनवाणी रसपीन ॥ २ ॥

चाल— सम्वत गुणयुत अचल इन्दु, हर्ष भरी गाइयो श्रीजिनेंदु।
तासु फल सुकृत थी सकल प्राणी, लहै ज्ञान उद्योत धन शिव निसाणी ॥३॥

श्लोक— इति जिनवरवृन्दं भक्तितः पूजयन्ति, सकलगुणनिधान देवचन्द्र स्तुवन्ति।
प्रतिदिवसमनन्त तत्वमुद्भासयन्ति, परमसहनरूप मोक्षसौख्यं श्रयन्ति ॥१॥

ॐ ह्रीं परमपरमात्मने अनन्तानन्तज्ञानशक्तये जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्री मज्जिनेन्द्राय अर्घ यजामहे स्वाहा।

॥ इति अर्घ पूजा ॥

[चार कोणें धार दीजे]

॥ अथ वस्त्र पूजा ॥

शक्रो यथा जिनपतेः सुरशैलचूला, सिंहासनोपरि मितस्नपनावसाने ।
दध्यक्षतैः कुसुमचन्दनगन्धधूपैः कृत्वार्चनन्तु विदधाति सुवस्त्रपूजां ॥१॥

तद्वत् श्रावकवर्ग एष विधिनालङ्कारवस्त्रादिकं,
पूजां तीर्थकृतां करोति सततं शक्त्यातिभक्त्या द्रुतः ।
नीरागस्य निरंजनस्य विजितारातेस्त्रिलोकीपतेः,
स्वस्यान्यस्य जनस्य निर्वृतिकृते क्लेशक्षयाकांक्षया ॥

ओं ह्रीं परमपरमात्मने अनन्तानन्तज्ञानशक्तये जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्री मज्जिनेन्द्राय वस्त्रं यजामहे स्वाहा ।

॥ इति वस्त्र पूजा ॥

[वस्त्र चढ़ावै]

॥ अथ निमक उतारण पूजा ॥

अह पडिभग्गापसर, पयाहिणं मुणिवय करिऊणं।
पडइ सलूणत्तण लज्जियश्च, लूणंहू अवहरंति ॥ १ ॥

पिक्खेविणु मुह निण वरह, दीहर नयण सलूण।
न्हायइ गुरु मन्छह भरिय, जलण पइस्सइ लूण ॥ २ ॥

लूण उतारिह जिणवरह, तिन्नि पयाहिणि देव।
तड तड शब्द करन्ति ये, विज्ञा विज्जजलेण ॥ ३ ॥

ज जेण विज्जव थुईं, जलेण त तहइ अत्थसहस्स।
जिनरूवा मन्छरेणवि, फुट्टइ लूण तड तडस्स ॥ ४ ॥

[ऐसा कह कर लूण अग्निशरण करै, पीछे लूण पाणी ले गाथा कहै]

गाथा— सव्ववि मुणवइ जलविजल, तन्तह भमणइ पास।
अहवि कयन्तस्स निम्मलउ, निग्गुण बुद्धि पयास। ५ ॥

जलण अणें विरण जलणहि पास, भरवि कयजल भावहि पास ।
तिन्नि पयाहिणि दिन्निय पास, जिम जिय छूटे भव दुहपास ॥ ६ ॥
जलनिम्मल कर कमलेहि लेविणु गुरवर भावहि मुणिवई सेवणु ।
पभणई जिणवर तुहपह मरणं, भग तुह लब्भह सिद्धि गमणं ॥ ७ ॥

॥ इति निमक उतारण पूजा ॥

[ऐसा कहकर लूण उतारी जल मरण कीजै]

॥ अथ पुष्पमाला पहरावण पूजा ॥

उन्नय पयय भत्तम्रा, निगठाणे संठिम कुणंतम्स ।
जिण पासे अमिय नगाम्म, पिच्छतुह हवह पउरणं ॥१॥
सव्वों जिणंपभावों, सरिसा सरिसेत जिण रजम्नी ।
सव्वन्नूण अपासे, जम्हा भमणं न सहमणं ॥२॥
अमन्त दुःकरं पिहु, हवह निनदेन जदेन कंं ।
आणा सव्वन्नूणं, न कया गुरुमच्च मूलमिणं ॥३॥

॥ इति पुष्प माला पहरावण पूजा ॥

[माला चढ़ावे]

॥ अथ छुठी फूल पूजा ॥

उवयोव मङ्गलेवो जिणाण सुह लालि सवलिया । तित्थपवत्तम समई तियसे विमुका कुसुमवुट्ठी ॥

॥ इति छुठी फूल पूजा ॥

[ऐसा कहकर 'फूल उछाली जे प्रभु आगे']

॥ प्रभात की आरती ॥

जय जय आरती शान्ति तुम्हारी, तोरा चरण कमल की मैं जाउ वलिहारी । टेर ।
विश्वसेन अचिराजी के नन्दा, शान्तिनाथ मुख पूनिम चन्दा । जय० १ ।
चालिस धनुष सोवनमय काया, मृग लाछन प्रभु चरण सुहाया । जय० २ ।
चक्रवर्ति प्रभु पचम सोहे, सोलम जिनवर जग सहु मोहे । जय० ३ ।
मगल आरति मोरे कीजे, जनम जनम को लाहो लीजे । जय० ४ ।
कर जोड़ी सेवक गुण गावे, सो नर नारी अमर पद पावे । जय० ५ ।

॥ संध्या की आरती ॥

ऋषभ अजित सम्भव अभिनन्दन, सुमति पदम सुपासकी,
जय महाराज की दीनदयाल की आरती कीजे । टेर ।
चन्द सुविधि शीतल श्रेयांस, वासु पूज्य जिनराजकी । जय० १ ।
विमल अनन्त धर्म हितकारी, शांतिनाथ सुखकारकी । जय० २ ।
कुंथुनाथ अर मल्लि मुनि सुव्रत, नमि नमुं सोवन कायकी । जय० ३ ।
नेमिनाथ प्रभु पार्श्व चिन्तामणि, वर्द्धमान भव रारकी । जय० ४ ।
कञ्चन आरती बहुविध सझकर, लीजे अङ्ग उछाहकी । जय० ५ ।
सकल संघ मिल आरती करत हैं, आवागगन निवारकी । जय० ६ ।

॥ इति ॥

—:※:—

॥ श्री नवपद-पूजा ॥



॥ पहली पूजा ॥

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं, णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्व साहूणं।
एसो पञ्चणमुक्कारो सव्व पावप्पणासणो। मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं हवइ मंगलं॥

परम मंत्र प्रणमी करो, तास धरो उर ध्यान।
अरिहंत-पद पूजा करो, निज निज शक्ति प्रमान॥

गाथा— उप्पन्न सन्नाण महो मयाणं। सप्पाडि हेरासण सट्ठियाणं॥
सद्देसणा णंदिय सज्जणाणं नमोन्नमो होउ सया जिणाणं॥१॥

ढाल— जिण शुद्धभावें निजात्मा पिछान्यो, स्वबोधे छण द्रव्यनों भेदजान्यो।
निज भाश्नवे सत्तप कर्म साध्यो, विपाकोदयी तीर्थकृन्नाम बाध्यो॥१॥

यदीय प्रभावैं जगत सुप्रसिद्धा वसुप्रातिहार्य्यादि सम्पत्ति सिद्धा।
परानन्द मग्ना सदा जे विशोका, नमो ते जिना सर्वदा भव्य लोका ॥२॥
नमो नन्त सन्त प्रमोद प्रदानं, प्रधानाय भव्यात्मने भास्वताय।
थया जेहना ध्यान थी सौख्यभाजा, सदा सिद्ध चक्राय श्री पालराजा ॥३॥
करया कर्मदुर्मम चकचूर जेणें, भला भव्य नवपद ध्यानेन तेणें।
करी पूजना भव्य भावे त्रिकालैं, सदा वासियो आतमा तेण कालैं ॥४॥
जिके तीर्थंकर कर्म उदयें करीने, दिये देशना भव्यने हित धरीने।
सदा आठ महा पाडिहारे समेता, सुरेसे नरेसे स्तव्या ब्रह्मपूता ॥५॥
कर्या घातिका कर्म च्यारे अलग्गा, भवोपग्रही च्यार छे जे विलग्गा।
जगत् पंच कल्याण के सौख्यपामे, नमो तेह तीर्थङ्करा मोक्षगामे ॥६॥

ढाल— तीरथपति अरिहा नमुं धर्मधुरंधर धीरोजी।
देशना अमृत वरसता निज वीरज वड़ वीरो जी ॥१॥

त्रोटक— वर अखय निर्मल ज्ञान भासन सर्व भाव प्रकासता,
निज शुद्ध श्रद्धा आत्म भावे चरण थिरता वासता।

जिन नाम कर्म प्रभाव अतिशय प्रातिहारज शोभता,
जग जन्तु करुणावंत भगवत भविक जननें थोभता ॥

ढाल— तीजे भव वर थानक तपकरि, जिण बांध्यु जिन नाम।
चौसठ इन्द्र पूजित जे जिन, कीजे तास प्रणाम रे ॥ १ ॥

भविया सिद्धचक्र पद वन्दो, जिम चिर काले नन्दो रे ॥ भ० ॥
उपशम रसनों कन्दो रे। भ०। रत्न त्रयीनो वृन्दो रे ॥ भ० ॥

वन्दी ने आनन्दो रे। भ०। सेवे सुर नर इन्दो रे भवि ॥ १ ॥

जेहने होय कल्याणक दिवसे, नरके पिण अजवालु।
सफल अधिक गुण अतिशय धारी ते जिन नमि अघटालु रे ॥ भ० २ ॥

जे तिहुँ नाण समग्ग उपन्ना, भोग करम क्षीण जाणी।
लेइ दीक्षा-शिक्षा दिये जगनें, ते नमिये जिन नाणी रे ॥ भ० ३ ॥

महा गोप महा माहण कहिये निर्यामक सत्थवाह।
उपमा एहवी जेहने छाजे, ते जिन नमिये उछाह रे ॥ भ० ४ ॥

आठ महा प्रातिहारज जसु छाजे, पतीस गुण युत वाणी।
जे प्रतिबोध करे जग जन नें, ते जिन नमिये प्राणी रे ॥ भ० ॥

॥ ढाल श्री सीमंधर स्वामी उपदिसे—ए देशी ॥

अरिहंत पद ध्याता थकाँ, दव्वह गुण पर्य्यायै रे।
भेद छेद करि आतमा, अरिहन्त रूपी थाये रे॥ २॥
वीर जिणेसर उपदिसे साम्भल ज्यो चित लाई रे।
आतम ध्याने आतमा, रिद्धि मिलें सब आई रे॥ वी०॥

ॐ ह्रीं परमात्मने अनन्तानन्तज्ञानशक्तये, जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमत्सिद्धचक्राय पंचामृतं, चंदनं, पुष्पं, धूपं, दीपं, अक्षतं, नैवेद्यं, फलं, वस्त्रं, वासं यजामहे स्वाहा।

❀ स्तवन ❀

प्रभु पार्श्व पार्श्व रत्न मिला मोहे लोहे से कंचन रूप मिला।
जलते हुए भी नाग को नवकार मंत्र सुना दिया।
धरणीधर पदवी दहे फिर स्वर्ग का सुख दे दिया।
मेरा हृदय कमल जिन देख खिला। कमठ-हठ-तप फन्द को फाड़ा जिन्होंने ज्ञानसे।
उपसर्ग होने पर चले नहीं जो कि अपने ध्यान से। जिन जित लिया है मोह-किला।
कीर्ति पूज्य प्रभु पारसनाथ का प्रसाद ही संसार में।
वल्लेश्या हमेशा पहुँचा मुक्ति के दरबार में। मुझे आज उसी का दर्श मिला प्रभु० ॥

॥ दूसरी पूजा ॥

दूजी पूजा सिद्ध को, कीजै दिल खुसियाल ।
अशुभ करम दूरे टलै, फलै मनोरथ माल ॥

छन्द— सिद्धाण माणन्द रमालयाणं । नमो नमो णन्त चउक्कयाणं ।
समग्ग कम्मक्खय कारयाण जम्म जरा दुक्ख निवारगाण ॥ २ ॥
निजानादि कर्माष्टके, क्षय करीने । जरा मृत्यु जन्मादि दूरे हरीने ।
स्थिता सर्व लोकाग्र भागे विशुद्धा, चिदानन्द रूपा स्वरूपे प्रसिद्धा ॥ ३ ॥
निजानन्त बोधादि युक्ता प्रदेशा । निराबाधत निर्वृता जे अलेशा ।
निराकार साकार भावे महता । भजो ते प्रमोदे सदा सिद्ध सता ॥ ४ ॥
करी आठ कर्मक्षये पार पाम्यॉ । जरानन्म मरणादि भय जेण वाम्या ।
निरावर्ण जे आत्मरूपे प्रसिद्धा । थया पार पामी सदा सिद्ध सिद्धा ॥ ५ ॥
त्रिभागोनदेहावगाहात्म देसा । रह्या ज्ञान मय जाति वर्णादि लेशा ।
सदानन्द सौख्या श्रिता जोति रूपा । अनाबाध अपुनर्भवादि स्वरूपा ॥ ६ ॥

॥ तीसरी पूजा ॥

हिव आचरज पदतणी, पूजा करो विशेष ।
मोहतिमिर दूरे हरे, सूझै भाव अशेष ॥

काव्य— सूरीण दूरीकय कुग्गहाणं नमो नमो सूरिसमप्पहाणं ।
सद्देसणा दाण समायराणं, अखंड छत्तीसगुणायराणं ॥ १ ॥
नमू सूरि राजा सदातत्वताजा, जिनेन्द्रागमे प्रौढ़ साम्राज्यभाजा ।
षड् वर्गवर्गित गुणे शोभमाना, पञ्चाचारने पालवे सावधाना ॥ २ ॥
जिके पञ्च आचार पाले सुभावें, अनित्यादि सम्भावना नित्यभावें ।
जिनेन्द्रागमे ज्ञान दाने सुरत्ता, बहूभव्यमें जे रहे अप्रमत्ता ॥ ३ ॥
छतीसे गुण दीप्यमाना गणेशा, सदाशासनाधारभूता सुलेशा ।
बहूभव्य लोका सुमार्गी नयंता, उज्योसूरि सुण्या सदा तेजवन्ता ॥ ४ ॥
भविप्राणिने देशना देशकालें, सदाअप्रमत्ता यथासूत्रआलें ।
जिकेशासनाधारदिग्दंतकल्पा, जगत्ते चिरंजीव जो शुद्धजल्पा ॥ ५ ॥

ढाल— आचारज मुनिपतिगणी, गुणछत्तीसेंधामोजी।
चिदानन्द रसस्वादता, परभावें निकामोजी ॥ १ आ० ॥

त्रोटक— नि काम निर्मलशुद्धचिद्घन, साध्यनिज निरधारथी।
वरज्ञान दरसण चरणवीरज, साधनाव्यापारथी।
भविजीवबोधक तत्वशोधक, सयलगुण सपतिधरा।
सम्वर समाधिगति उपाधि, दुविध तपगुण आदरा ॥

ढाल— पचआचार जे सूधापालें, मारगभाखें साचो।
ते आचारज नमियेतेहसु, प्रे म करीने जाचोरे भ० ॥ १ ॥
वर छत्तीस गुणकरिशोभे, युगप्रधान जगमोहे।
जगमोहे न रहे खिणु कोहे, सूरि नमु ते जोहे रे भ० ॥ २ ॥
नित अप्रमत्त धरमउवएसें, नहि विकथा न कषाय।
जेहने ते आचारज नमियें, अक्लुस अमलअमायरे भ० ॥ ३ ॥
जेदियेसारण वारण चोयण, पडिचोयण वलिजनने।
पटधारी गच्छथंभ आचारज, तेमान्या मुनि मनने रे भ० ॥ ४ ॥

अत्थमियें जिन सूरज केवल, चन्दीजें जगदीवो।
भुवन पदारथ प्रकटन पटुते, आचारज चिरजीवो रे भ० ॥ ५ ॥

ढाल— ध्याता आचारजभला, महामंत्र शुभ ध्यानीरे।
पंचप्रस्थाने आतमा, आचारज होयप्राणीरे। वी० ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं परमात्मने अनन्तानन्तज्ञानशक्तये, जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमद्सिद्धचक्राय पञ्चामृतं, चन्दनं, पुष्पं, धूपं, दीपं, अक्षतं नैवेद्यं, फलं, वस्त्रं, वासं यजामहे स्वाहा।

॥ स्तवन ॥

आया-आया मैं आज, तेरे शरणे सिरताज, प्रभु रखना जी लाज, करूँ विनती तुम्हें।
मैं हूँ अनाथ, कोई नहीं है साथ, बस तेरा आधार, मुझे अब तो है नाथ ॥प्रभु०॥
कीर्ति पूज्य प्रभु धार, दया करके दातार, देदो मुक्ति मनोहार, ॥प्रभु०॥

—:※:—

॥ चौथी पूजा ॥

गुण अनेक जग जेहना, सुन्दर शोभित गात्र।
उवझाया पद अरचिये, अनुभव रसनो पात्र ॥

गाथा— सुत्तत्थ वित्थारण तप्पराणं। नमोनमो वायग कुंजराणं।
गणस्स संधारण सायराणं। सव्वप्पणावज्जिय मच्छराणं ॥ १ ॥

महा सूत्र सिद्धान्त शुद्धे करीने। पढावे सुशिष्या अनुग्रह धरीने।
करें पूजना लोक मध्ये तदीया। स्फुरन्ती दृशी जास शक्ति स्वकीया ॥ २ ॥

गणे सारशुद्धि सहर्षं करन्ता, मुनी वर्ग मध्ये प्रमादं हरन्ता।
पचीसे गुणे युक्तदेहा सुधूर्या, सदा वन्दिये ते उपाध्याय पूर्ण्या ॥ ३ ॥

नहीं सूरि पण सूरिगुण ने सुहाया, नमु वाचका त्यक्त मद मोह माया।
वलीद्वादशांगादि सूत्रार्थ दाने, जिके सावधाने निरुद्धाभिमाने ॥ ४ ॥

धरे पंच ने वर्ग वर्गित गुणोघा, प्रवादी द्विपोच्छेदने तुल्य सिंघा।
गुणी गच्छ सन्धारणे स्तम्भभूता, उपाध्याय ते वन्दिये चित् प्रभूता ॥ ५ ॥

ढाल— खंतिजुवा मुत्तिजुआ, अज्जव मद्दव जुत्ताजी।
सच्चंसोय अकिंचणा, तव संजम गुणरत्ताजी ॥ १ ॥

त्रोटक— जें रम्या ब्रम्हसुगुप्तगुप्ता, सुमति सुमता शुभ धरा।
स्याद्वाद वादें तत्वसाधक, आत्म पर विभंजन करा॥

भव भीरु साधन धीर शासन, वहनधोरी मुनिवरा।
सिद्धान्त वायन दान समरथ, नमो पाठक पदधरा ॥ २ ॥

ढाल— द्वादशअंग सिज्झाय करे जे, पारग धारग तास।
सूत्र अरथ विस्तार रसिक ते, नमो उवज्झाय उल्लास रे भ० ॥ १ ॥

अर्थ सूत्र ने दान विभागे, आचारज उवज्झाय।
भवतिन्ये जे लहे शिवसम्पद, नमिये ते सुपसाय रे भ० ॥ २ ॥

मूरख शिष्यनीपाये जे प्रभु, पाहण पल्लव आणे।
ते उवज्झाय सकल जन पूजित, सूत्र अरथ सविजाणेरे भ० ॥ ३ ॥

राजकुमर सरिखागण चिंतक, आचारज पद योग।
जेऊवज्झाय सदा ते नमतां, नावे भवभयसोगरे भ० ॥ ४ ॥

बावना चंदन रस सम वयणे, अहित ताप सविटाले।
ते उवझाय नमीजे जे वलि, जिनशासन अजुवाले रे भ० ॥ ५ ॥

ढाल— तप सिज्झाये रत सदा, द्वादश अंग नो ध्यातारे।
उपाध्याय ते आतमा, जगबन्धव जग भ्राता ॥ रे वी० ॥

ॐ ह्रीं परमात्मने अनन्तानन्तज्ञानशक्तये, जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमत्सिद्धचक्राय पञ्चामृतं, चन्दनं, पुष्प, धूप, दीप, अक्षत, नैवेद्य, फल, वस्त्र, वास यजामहे स्वाहा।

❀ स्तवन ❀

सिद्धगिरि तीरथ जैसा और नहीं धाम है।
अनादि अनन्त बीते, काल नहीं काम जीते, अब तो तू चेत प्राणी यह तेरा काम है।
तन का तमीज करना, क्रोध लोभ दूर हरना, मान माया त्याग तेरा मुक्ति में मकान है।
रात दिवस किये पूरे सभी हैं काम अधूरे, मानले अब कहना तारक देव गुरु नाम है।
जीवा योनि लाख चौरासी फिर आया।
हारा नहीं जीतो बाजो चाहता यदि रहना राजो, राग द्वेष काट प्यारे तुही आत्मारामहै।
जब मिले कारण निमित्त सिद्ध होय कारजचित्त, तीरथ शुभ मान जिन मुक्ति पद ठाम है ॥

—❀—

॥ पांचवीं पूजा ॥

मोक्ष मारग साधन भणीं, सावधान थया जेह।
ते मुनिवर पद वन्दतां, निर्मल थायें देह ॥

छन्द— साहूण संसाहिय संयमाणं, नमो-नमो शुद्ध दयादमाणं।
तिगुत्त गुत्ताण समाहियाणं, मुणीण आणन्द पयट्ठियाणं ॥ १ ॥
जिके दर्शनज्ञान चारित्र रत्ने, करी मोक्षसाधे प्रधानप्रयत्नें।
सुमत्तो गुपत्ती धरे सावधाना, शुभाचार पाले हरैं मोह माना ॥ २ ॥
विवर्जे विकत्था प्रमादादि दोषा, जितेन्द्री पणें जे महा ज्ञानकोसा।
शुभ ध्यान ध्यावें गुणौ ये समिद्धा, नमो तै सदा सर्व साधु प्रसिद्धा ॥ ३ ॥
करैं सेवना सूरिवायग गणीने, करूं वर्णना तेहनो श्री मुणीने।
समेता सदा पंच सुमति त्रिगुप्ता, त्रिगुप्तें नहीं काम भोगेषु लिप्ता ॥ ४ ॥
वली बाह्य अभ्यंतरे ग्रंथि टाली, ऊह मुक्ति ने योग चारित्र पाली।
शुभाष्टांग योगे रमें चित्त वाली, नमुं साधने तेह निज पाप टाली ॥ ५ ॥

ढाल— सकल विषय विषवारिने, निक्कामो निस्सगीजी।
भवदव ताप समावता, आतम साधन रङ्गी जी॥ ५॥

त्रोटक— जे रम्या शुद्ध स्वरूप, रमणें देह निर्मम निर्मदा।
काउसग्ग मुद्रा धीर आसन ध्यान अभ्यासी सदा।
तप तेज दीपै कर्म जीपै नैव छीपै परभणी।
मुनिराज करुणा सिंधु त्रिभुवन बधु प्रणमो हित भणी॥ २॥

ढाल— जिम तरु फूले भमरो बसे, पीडा तसु न उपाय।
लेई रस आतम सन्तोषै, तिम मुनि गोचरि जाय रे भ०॥ १॥

पचेन्द्रीय ने जे नित जीपे, षट् काया प्रतिपाल।
संयम सतर प्रकार आराधे, वन्दू दीन दयाल रे भ०॥ २॥

अढार सहस्र सीलागनाधोरी, अचल आचार चरित्र।
मुनि महंत जयणा युत बन्दी, कीजे जनमपवित्र रे भ०॥ ३॥

नवविधि ब्रह्मगुपत जे पालें, बारह विह तप सूरा।
एहवामुनि नमिये जो प्रगटे, पूरव पुण्य अकूरा रे भ०॥ ४॥

सोना तणी परें परीक्षादीसें, दिनदिन चढतेवानें।
संयम खपकरता मुनि नमिये, देश कालअनुमाने रे भ०॥ ५॥

ढाल— अप्रमत्त जे नित रहै, नवि हरषें नविसोचैं रे।
साधु सुधा ते आतमा, स्यूं मूंडे स्यूं लोचैं रे॥ वी०॥

ॐ ह्री परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञानशक्तये, जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्री मत्सिद्धचक्राय पंचामृतं, चंदनं, पुष्पं, धूपं, दीपं, अक्षतं, नैवेद्यं, फलं, वस्त्रं, वासं यजामहे स्वाहा।

❀ स्तवन ❀

निज अंतरंग अरि जै डंका बजवा दिया वीर जिनेश्वर ने।
है दान शील तप भाव सदा शुभ मारग उसमें चलने से।
भविजन शिवपुर को जाते हैं फरमा दिया वीर जिनेश्वर ने॥
जहाँ कर्म मेल नहीं रहता है आतम परमातम होता है।
आओ, ज्योति से ज्योति मिलाते हैं फरमा दिया वीर जिनेश्वर ने॥
कीर्ति पूज्य जिनेश्वर देव नमो भवि काल अनादि की चाल गमो।
फिर मुक्ति रमणी के संग रमो फरमा दिया वीर जिनेश्वर ने॥

॥ छठवीं पूजा ॥

जिनवर भाषित शुद्धनय, तत्त्वतणी परतीत ।
ते सम्यग् दर्शन सदा, आदरिये शुभरीत ॥

छन्द— -जिणुत्त तत्ते रुइलक्खणस्स, नमोनमो निम्मल दंसणस्स ।
मिच्छत्त नासाइ समुग्गमस्स, मूलस्स सद्धम्म महा दुमस्स ॥ २ ॥

ढाल— अनतानुबंधी क्षयादि प्रकारें, महामोह मिथ्यात्वने जेह वारें ।
इगव्यादिभेदें करी वर्णवीजे, समसद्विभेदें वली जे थुणीजे ॥ ३ ॥
जिनेन्द्रोक्त तत्त्वार्थश्रद्धान रूपो, गुणासर्व मध्ये प्रवर्त्तेअनूपो ।
विना जेण नाण चरित्त न शुद्ध, सुह दशण तं नमामो विशुद्ध ॥ ४ ॥
विपर्यासहोवासना रूपमिथ्या, टलें जेअनादि अछे जे कुपथ्या ।
जिनोक्तें हुइ सहजथी शुद्ध ध्यान, कहीयें दर्शन तेह परमनिधान ॥ ५ ॥
विनाजेहथीज्ञान मज्ञानरूप, चरित्र विचित्र भवारण्य कूप ।
प्रकृतिसातमे उपसमई क्षयेंतेहहोवे, तिहाआपरूपें सदाआपजोवै ॥ ६ ॥

दीन-दीन दुखिया में जगमें अड़चन होती है पगपग में ।
दूर करो सम्भालो स्वामी करुणा के अवतार ॥

पापी हूँ पण सेवक थांरो चरणशरण लीनो सुखकारो ।
मत मुझ को बिसारो स्वामी करुणा के अवतार ॥

श्री कीर्तिपूज्य उड़ीके थाणें दर्शन देदो अब तो म्हाने ।
खोलो मुक्ति को दरबार स्वामी करुणा के अवतार ॥

महावीर वीर मुझको जल्दी बनाइयेगा, हे आठ कर्म दुश्मन उनको भगाइयेगा ।
हे रतन का खजाना इस आत्म भूमिका में, मुझको ये लूटते हैं स्वामी बचाइयेगा ।
कीर्ति पूज्य मुक्ति गामी जिन वीतराग सुनलो, मैं दास हूँ तुम्हारा स्वामी बचाइयेगा ॥

॥ सातवीं पूजा ॥

सप्तम पद श्री ज्ञाननों, सिद्ध चक्र तप माह । आराधी जे शुभ मनें, दिन दिन अधिक उछाह ॥

छन्द— अन्नाण समोह तमो हरस्स, नमो नमो नाण दिवायरस्स ।
पंचप्प यारस्सु वगारगस्स सत्ताण सव्वत्थ पयासगस्स ॥ १ ॥
होवें जेहथी सर्व्व अज्ञानरोधो, जिनाधीश्वर प्रोक्त अर्थावबोधो ।
मतिआदि पञ्च प्रकारप्रसिद्धो, जगद्भासने सर्वदेवा विरुद्धो ॥ २ ॥
यदीय प्रभावें सुभक्ष अभक्ष, सुपेयं अपेयं सुकृत्य अकृत्यं ।
जिणे जाणियें लोकमध्ये सुनाणं, सदा मे विशुद्धं तदेव प्रमाण ॥ ३ ॥
होइजेहथी ज्ञान शुद्धिप्रबोधें, यथावर्णनासें विचित्रा विबोधें ।
तिणें जाणिये वस्तुषड् द्रव्यभावा, न होवें वितत्था निजेच्छास्वभावा ॥ ४ ॥
होइपञ्च मत्यादि सुज्ञानभेदें, गुरूपास थी योग्यता तेह वेदें ।
वलिज्ञेयहैया उपादेय रूपी, लहें चित्त मा जेम ध्यानेप्रदीपी ॥ ५ ॥

ढाल— भव्य नमो गुण ज्ञाननें, स्वपरप्रकाशक भावेंजी।
पर्याय धर्म अनन्तता, भेदाभेद स्वभावेंजी भ० ॥ १ ॥

त्रोटक— जेमोक्षपरणति सकल ज्ञायक, वोधवास विलासता।
मति आदि पंचप्रकारनिर्मल, सिद्धसाधन लंछना।
स्याद्वादसंगी तत्वरंगी, प्रथम भेद अभेदता।
सविकल्पने अविकल्प वस्तु, सकल संशय छेदता॥ २ ॥

ढाल— भक्ष अभक्ष न जे विन लहिये, पेयअपेय विचार।
कृत्य अकृत्य न जे विन लहिये ज्ञान ते सकल आधार रे भ० ॥ १ ॥
प्रथम ज्ञान ने पीछे अहिंसा, श्री सिद्धांतेभाख्यु।
ज्ञाननें वंदो ज्ञान म निंदो, ज्ञानीये शिवसुख चाख्यु रे भ० ॥ २ ॥
सकलक्रियानो मूलजेश्रद्धा, तेहनूं मूल जे कहिये।
तेहज्ञान नितनित वंदीजे, ते विण कहो किम रहिये रे भ० ॥ ३ ॥
पांचज्ञान मांहे जेह सदागम, स्वपर प्रकाशक तेह।
दीपक पर त्रिभुवन उपकारी, वलिजिम रविशशि मेह रे भ०॥ ४ ॥

लोक उरध अध तिर्यग् ज्योतिष, वैमानीक ने सिद्धि।
लोक अलोक प्रगट सब जेहथी, ते ज्ञाने मुझ शुद्धि रे भ० ॥ ५ ॥

ढाल— ज्ञानावरणी जे कर्म छै, क्षय उपशम तसु थायरे।
तो होय गहिज आतमा, ज्ञान अबोधता जाय रे वी० ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं परमपरमात्मने अनन्तानन्तज्ञानशक्तये, जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमत्सिद्ध चनाय पचामृतं, चन्दन, पुष्प, धूप, दीप अक्षत, नैवेद्य, फल, वस्त्र, वास यजामहे स्वाहा।

ॐ स्तवन ॐ

प्रभु पूजा है प्यारी भव पार उतारी करो शास्त्र अनुसारो।
(मेरे प्यारे सुजान) मनोती सुजान प्रभु पूजा बनाओ।
पूजन से शिव सुख पाओ मेरे जान।
करो पूजा भगवान धरो सुमती का ध्यान, होय आतम कल्याण प्रभु ॥

—०—

॥ आठवीं पूजा ॥

अष्टम पद चारित्र नों, पूजो धरी उमेद ।
पूजत अनुभव रस मिलै, पातिक होय उछेद ॥

छंद— आराहिया खंडिअ सक्कियस्स, नमो नमो संयम वीरियस्स ।
सज्झावणा संग विवट्टियस्स, निव्वाण दाणाइ समुज्झयस्स ॥ १ ॥
फजै जेह संपूर्ण थी तत्तकालं, गुणाणंपि सर्वात्मभावे विशालं ।
जिणें आदियों जे प्रयत्नें करीने, दियो लोकनें जे अनुग्रह धरी नें ॥ २ ॥
होवेजेहथीं रंकलोकोपि पूज्यो, गुण श्रेणि दीपतो जेम् सूर्यो ।
स्वकीये सुभेदैं करी जे विचित्रं, जयो ते सदा लोक मध्ये चरित्रं ॥ ३ ॥
वली ज्ञान फल ते धरिये सुरंगें, निरासंसता द्वार रोधे प्रसंगे ।
भवांबोधि संतारणे यान तुल्यं धरूं तेह चारित्र अप्राप्त मूल्यं ॥ ४ ॥
होइं जास महिमा थकी रंक राजा, वली द्वादशांगी भणी होइ ताजा ।
वली पापरूपोपि निःपाप थाये, थई सिद्ध ते कर्म नें पार जावे ॥ ५ ॥

ढाल— चारित्र गुण वलि वलि नमो, तत्व रमण जसु मूलो जी।
पर रमणीय पणो टलें, सकल सिद्धिअनुकूलोजी ॥

त्रोटक— प्रतिकूल आश्रव त्याग संयम तत्र थिरता दम मयी।
शुचि परम खंती मुनींद सपद पञ्च संवर उपचयी।
सामायिकादिक भेद धर्मे यथाख्याते पूर्णता।
अकषाय अकुलुष अमल उज्जवल काम कश्मल चूर्णता ॥ १ ॥

ढाल— देश विरत नें सर्व विरतजे, गृही यती ने अभिराम।
ते चारित्र जगत जयवन्तो, कीजे तास प्रणाम रे भ० ॥ १ ॥
तृण परं जे षट् खंड सुख छंडी, चक्रवर्त्तिपण वरिऊ।
ते चारित्र अक्षय सुख कारण, ते मैं मनमाहि धरिऊ रे भ० ॥ २ ॥
हुवा रांक पण जेह आदरि, पूजित इन्द नरिन्द।
अशरण शरण चरण ते वंदु, जरिऊ ज्ञान आनन्द रे भ० ॥ ३ ॥
वारमास पर्याये जेहनें, अनुत्तर सुख अतिक्रमिये।
शुक्ल सुकल अभिजात्य ते उपर, ते चारित्रनें नमिये रे भ० ॥ ४ ॥

चैते आठ कर्मनो संचय, रिक्त करै जे तेह।
चारित्र नाम निरुक्ते भाख्यूं, ते वंदूं गुणगेह रे भ० ॥ ५ ॥

ाल — जाणी चारित्र ते आतमा। निज स्वभावमांहि रमतोरे।
लेश्या शुद्धअलंकर्यो, मोह वने नवि भमतो रे वीर० ॥ १३ ॥

ॐ ह्रीं परमात्मने आनन्तानन्तज्ञानशक्तये, जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमत्सिद्धचक्राय
ज्वामृतं, चंदनं, पुष्पं, धूपं, दीपं, अक्षतं, नैवेद्यं, फलं, वस्त्रं, वासं यजामहे स्वाहा।

❀ स्तवन ❀

तूँ ही है स्वामी मेरे प्राण आधार।
निपट कपट मोहे राज महाराज मुझे देवत दुख अपार।
तूँ ही है स्वामी मेरे प्राणाधार।
कर्म लूटेरे लूटत मुझको फिर रहे संसार।
तूँ ही है स्वामी मेरे प्राणाधार।
हारा हूँ कीर्ति पूज्य प्रभु मुझे मुक्ति पद सार।

—❀—

॥ नवमी पूजा ॥

करम काष्ट प्रति जालवा, परतिख अगनि समान।
ते नवपद पूजो सदा, निर्मल धरियै ध्यान ॥

छन्द—
कम्मद्दुमोन्मूलन कुञ्जरस्स, नमो नमो तिव्व तवोयरस्स।
अणेग लद्धीण निबन्धणस्स, दुस्सज्झ अत्थाणय साहणस्स ॥ १ ॥

इय नवपय सिद्धि लद्धि विज्झासमीद्ध, पयडिय सरवग ह्रीं तिरेहासमग्गं।
दिसिवय सुरसार खोणि पीढावयार तिजय विजय चक्क सिद्ध चक्क नमामि ॥२॥

त्रिकालक पणें कर्म कषाय टालें, निकाचित पणे बाधिया तेहवालें।
कह्यो तेह तप बाह्य अभ्यतर दुभेदे, क्षमा युक्ति निर्हेत दुर्ध्यान छेदे ॥ ३ ॥

होई जास महिमाथकी लब्धिसिद्धि, अवाछक पणें कर्म्म आवरण शुद्धि।
तपो तेह तपजे महानंद हेतें, होइ सिद्धि सीमतनी निज सकेते ॥ ४ ॥

इम नवपद ध्यावें,परम आनद पावे,नव भव शिव जावे,देवनर भवज पावे।
ज्ञानविमल गुणगावें सिद्धचक्रप्रभावें,सवदुरति समावें विश्व जयकार पावें ॥५॥

ढाल— इच्छारोधन तप नमो, बाह्य अभ्यंतर भेदेजी।
आतम सत्ता एकत्वता, परपरणित उच्छेदेजी॥

त्रोटक— उच्छेदकर्म अनादि संतति, जेह सिद्ध पणो वरें।
शुभयोगसंग आहारटाली, भाव अक्रयता करें।
अन्तर महूरत तत्वसाधे सर्व्व सम्वरता करी।
निज आतम सत्ता प्रकटभावें, करो तपगुण आदरी॥ १॥

ढाल— इम नवपद गुण मंडलं, चउनिक्षेप प्रमाणेंजी।
सात नयें जे आदरें सम्यग ज्ञानें जाणें जी॥

त्रोटक— निरधार सेती गुणें गुणनो करें जे बहु मान ए।
जसुकरण ईहा तत्व रमणें थायें निर्मल ध्यान ए।
इम शुद्ध सत्ता भलो चेतन सकल सिद्धी अनुसरें।
अक्षय अनन्त-महन्त चिद्घन परम आनन्दता वरें॥ १॥

कलश— इम सयल सुखकर गुण पुरन्दर सिद्धचक्र पदावली।
सविलब्धि विज्जा सिद्धि मंदिर भविक पूजो मनरली।

उवझाय वर श्री ज्ञान सागर शाखा धर्म सुराजता।
गुरुदीपचन्द सुचरण सेवक देवचन्द सु शोभता ॥ २ ॥

ढाल—

जाणन्ता त्रिहुज्ञानें संयुत, ते भव मुगति जिनन्द।
जेह आदरें कर्म खपेवा, ते तप सुरतरु वंदे रे भ० ॥ १ ॥
कर्म निकाचित पण क्षय जायें, क्षमा सहित जे करता।
ते तप नमिये जेह दीपावें, जिन शासन उजवता रे भ० ॥ २ ॥
आमोसही पमुहा बहु लद्धी, होई जास प्रभावें।
अष्ट महासिद्धि नव निधि प्रगटें, नमिये ते तप भावें रे भ० ॥ ३ ॥
फल शिव सुख मोटूं सुर नरवर, संपति जेहनु फूल।
ते तप सुरतरु सरिखो वंदुं, सम मकरन्द अमूल रे भ० ॥ ४ ॥
सर्व मंगल मांहे पहलो मंगल, वरणवियो जे ग्रंथे।
ते तप पद त्रिहु काले नमिये, वर सहाय शिव पंथे रे भ० ॥ ५ ॥
इम नवपद थुणतो तिहां लीनो, हुवो तनमय श्रीपाल।
सुजस विलासे चोथे खंडे, एह इग्यारमी ढाल रे भ० ॥ ६ ॥

ढाल—

इच्छारोधन संवरी, परणित समता योगे रे।
तप ते एहिज आतमा, वरतें निज गुण भोगे रे ॥ वी० १ ॥
आगम नोआगमतणो, भाव ते जाणो साचो रे।
आतम भावे थिर हुओ, पर भावें मत राचो रे ॥ वी० २ ॥
अष्ट सकल समृद्धिनी, घटमाहें रिद्ध दाखी रे।
तिम नवपद रिद्ध जाणज्यो, आतमराम छें साखी रे ॥ वी० ३ ॥
योग असंख्य छें जिन कह्या नवपद मुख्य ते जाणोरे।
एह तणें अवलंब ने, आतम ध्यान प्रमाणे रे ॥ वी० ४ ॥
ढाल बारमी एहवी, चौथे खंडे पूरी रे।
वाणी वाचक जस तणी, कोइय न रही अधूरी रे ॥ वी० ५ ॥

ॐ ह्रीं परमात्मने अनन्तज्ञानशक्तये, जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमत्सिद्धचक्राय पंचामृतं, चन्दनं, पुष्पं, धूपं, अक्षतं, नैवेद्यं, फलं, वस्त्रं, वासं यजामहे स्वाहा।

❀ स्तवन ❀

नवपद की सेवा क्यों न करे ॥ न० ॥
नवपद पूजा शिवसुख पावे, ध्यान धर्यो दुख सब टलेरे ॥ न० १ ॥
आंबिल की क्रिया तुम करके विधि गुरु मुखसे चित लहेरे ॥ न० २ ॥

नवपद महिमा उत्तम दाखी, श्रीपाल चरित्र में महिमा बढी रे ॥ न० ३ ॥
साढ़े चार वरस तप कीरिया, उद्यापन मन रंग रली रे ॥ न० ४ ॥
श्रीअक्षयराज सूरी की कृपा से, अजय अमर पद सुख वरे रे ॥ न० ५ ॥

॥ अथ नवपदजी की आरती ॥

जय-जय जग जन वाञ्छित पूरण सुरतरु अभिरामी ।
आतम रूप विमल कर तारक अनुभव परिणामी ज० ॥ १ ॥

जय जय जग सारा, भविजन आधारा । आरति पार उतारा, सिद्ध चक्र सुख कारा ज० ॥२॥
जग नायक जग गुरु जिणचन्दा, भज श्री भगवन्ता आतमराम रमा सुख भागी सिद्धा जयवन्ता ॥३॥
पञ्चाचार दिये आचारज युगवर गुण भारी, धारक वाचक सूत्र अरथना पाठक भव तारी ॥४॥
समदम रूप सकल गुण धारक, मीठा मुनि राया। दरसण नाण सदा जय कारक सञ्जम तप गाया॥५॥
नवपद सार परम गुरु भाये, सिद्धचक जयकारी । इह भव पर भव रिधि सिधि दायक भव सायरवारी॥६
कर जोडी सेवक जस गावे मन वाञ्छित पावे । श्री जिन चन्द चरण परि पजक शिव कमला पावे ॥७॥

॥ इति नवपद आरती सम्पूर्ण ॥

—※—

॥ द्वितीय विलेपन पूजा ॥

॥ राग रामगिरी ॥

गात्र लूहे जिन मनरंगसुं हो देवा। गा०।
सखर सुधूपित वाससुं हांरे देवा वाससुं।
गंधक सायसुं मेलिये, नंदन चंदन चंद मेलिये रे देवा ॥ नं० ॥ १ ॥

मांहे मृगमद कुंकम भेलीये, कर लीये रयणपिंगाणी कन्नोलीये ॥ २ ॥

पग जानु कर खंधे सिरे रे देवा, भाल कंठ उर उदरंतरे।
दुख हरे हांरे देवा सुख करे, तिलक नवे अंग कीजिये ॥ ३ ॥

दूजी पूजा अनुसरे श्रावक, हरि निरखे जिम सुरगिरे।
तिम करे जिणपर जन मन रंजीये ॥ ४ ॥

॥ राग ललित ॥

करहुँ विलेपन सुखसदन, श्रीजिनचंद शरीर। तिलक नवे अंग पूजतां, लहे भवोदधि तीर ॥
मिटे ताप तसु देहको, परम शिशिरता संग। चित्त खेद सवि उपरामे, सुख में सगरसी रंग ॥

॥ राग विलावल ॥

विलेपन कीजे श्री जिनवर अंगे, जिनवर अंग सुगंधे।
कुंकुम चंदन मृगमद यक्षकर्दम, अगरमिश्रित मनरंगे ॥ वि० ॥ १ ॥

पग जानू कर स्कंधे सिर, भालकंठ उर उदर तर संगे।
विलुपति अघ मेरी करत विलेपन, तपत कुमति निस अंगे ॥ वि० ॥ २ ॥

नवअंग नव नव तिलक करत ही, मिलत नवे निधि चंगे।
कहै साधु तनु शुचि करो, सुललित पूजा जैसे गंगतरंगे ॥ वि० ॥ ३ ॥



॥ तृतीय वस्त्रयुगल पूजा ॥

वसनयुगल उज्वल विमल, आरोपे जिण अंग ।
लाभ ज्ञान दर्शन लहे, पूजा तृतीय प्रसंग ॥

॥ राग गोडी ॥

कमल कोमलघनं, चंदनं चर्चितं, सुगंधगंधे अधिवासिया ए हां रे अइ० ।
कनकमंडित हये, लालपल्लव शुचि वसनजुग कंत अतिवासिया ए ॥ १ ॥
जिनप उत्तम अंगे, सुविधि शक्रो यथा, करिय पहिरावणी ढोइये ए हां रे ।
पाप लूहण अंग लूहणु देवने, वस्त्रयुग पूज मल धोइये ए हां रे अ० ॥ २ ॥

॥ राग वैराडी ॥

देवदुष्य जुग पूजा बन्यो हे जगतगुरु, देव दुख हर अब इतनो मागुं ।
तुंहिज सब ही हित तुंहिज मुगतिदाता, तिण नमि नमि प्रभुजीके चरणे लागुं ॥ १ ॥
कहे साधु त्रीजी पूजा केवल दंसण नाण, देवदुष्य मिश देहुं उत्तम वागुं ।
श्रवण अंजली पुट सुगुण अमृत पीतां, सविराडि दुख संशय घुरम भांगु दे० ॥ २ ॥

॥ चतुर्थ वासक्षेप पूजा ॥

पूज चतुर्थी इण परे, सुमति वधारे वास।
कुमति कुगति दूरे हरे, दहे मोह दल पास॥

॥ राग सारंग ॥

हांहो रे देवा बावन चंदन घसि कुमकुमा चूरण विधि विरचे वासु ए। हां॥
कुसुम चूरण चंदन मृगमदा, ककोल तणो अधिवासु ए। हां॥ १॥
वास दशोदिशि वासती, पूजे जिन अंग उवंगु ए॥ हां०॥
लाछि भुवन अधिवासिया, अनुगामी की नरम अभंगु ए॥ २॥

॥ राग गौडी तथा पर्वी ॥

मेरे प्रभुजीकी पूजा आणंद मेले। मे०।
वास भुवन मीणो सब लोए, संपदा मेले की पूजा०॥ १॥
सतर प्रकारी पूजा, विजय देवा तत्ता थेई।
अप्रमत गुण तोरा चरण सेवा की पूजा०॥ २॥
कुसुम चंदनवासे, पूजीये जिनराज तत्ताथेई।
चतुर्गति दुख गोरी चतुर्थी धनकी पूजा०॥ ३॥

॥ पंचम पुष्पारोहण पूजा ॥

मन विकसे तिम विकसतां, पुष्प अनेक प्रकार।
प्रभुपूजा ए पंचमी, पंचमि गति दातार ॥

॥ राग कामोद ॥

पाडल चंपक केतकी हां रे अ० ए, कुंद किरण मचकुंद्र।
सोवन जाइ जूईका, विउलसिरी अरविंद ॥ १ ॥
जिनवर चरण उवरि धरे ए हां रे अ०, मुकुलित कुसुम अनेक।
शिव रमणी से वर वरे, विधि जिन पूज विवेक ॥ २ ॥

॥ राग कानडो ॥

सोहेरी माई वरणे मन मोहेरी माई वरणे, विविध कुसुम जिनचरणे ॥ सो० ॥
विकसी हसी जंपे साहिबकुं, राखि प्रभु हम सरणे ॥ सो० १ ॥
पंचमि पूज कुसुम मुकुलित की, पंचविषय दुख हरणे ॥ सो० ॥
कहे साधुकीरति भगति भगवंतकी, भविक नरा सुखकरणे ॥ सो० २ ॥

॥ छठी मालारोहण पूजा ॥

छठी पूजा ए छतो, महासुरभि पुष्फमाल । गुण गूंथी थापे गले, जेम टले दुखजाल ॥

॥ राग रामगिरी गुर्जरी ॥

हे नाग पुन्नाग मदार नव मालिका, हे मल्लिकासोग पारधि कली ए।
हे मरुक दमणक बकुल तिलक वासतिका, हे लाल गुल्लाल पाडल मिली ए ॥ १ ॥
हे जासुमणि मोगरा बेउला मालती ए, हे पंच वरणे गुथी मालती ए।
हे माल जिन कंठ पीठ ठवी लहलहे, हे जाण संताप सहु टालती ए ॥ २ ॥

॥ राग आशावरी ॥

देखी शामा कंठ जिन अधिक ए रति नदे, चकोरकु देखि देखि जिम चदे ॥ दे० १ ॥
पंचविध वरण रची कुसुमाकी जैसी रयणावलि सुहमदे ॥ दे० २ ॥
छट्ठी रे तोडर पूजा तव डर पूजें, सव अरिजन हुइ हुइ तिम छन्दे ॥ दे० ३ ॥
कहे साधुकीरति सकल आशा सुरत, भविक भगत जे जिण वदे ॥ दे० ४ ॥

॥ सप्तम वर्ण पूजा ॥

केतकि चंपक केवड़ा, शोभे तेम सुगात । चाढो जिम चढतां हुवे, सातमिये सुखसात ॥

॥ राग केदारो गोडी ॥

कुंकुम चर्चित विविध पंच वरणक, कुसुमसु ंए ॥ हांरे अ० ॥
कुंद गुल्ला लशु ंचंपको दमणको, जासुसु ंए ॥ १ ॥
सातमी पूजमें अंगिए अंग आलंगिये ए ।
अंगि आलंग मिश मानवी, मुगति आलिंगिये ए ॥ २ ॥

॥ राग भैरवी ॥

पंच वरणी अंगी रचि, सुकुमनी जाती । फूलन की जाती ॥ पं० ॥
कुंद मचकुंद गुलाब शिरोमणी, कर करणी सोवन जाती ॥ पं० ॥
दमणक मरुक पाडल अरविंदो, अंस जूई बेउल वाती ॥पं० १॥
पारधि चरण कल्हार मंदारो, विण पटकूल बनी भांती ॥ पं० ॥
सुर नर किन्नर रमणी गाती, भैरवी कुगति ब्रतती दाती ॥ पं० २ ॥

॥ अष्टम गधवटी पूजा ॥

॥ दोहा सोरठ रागमा ॥

सोरठ राग सुहामणी, मुखेन मेली जाय। ज्यु ज्यु रात गलतिया, त्यु त्यु मीठी थाय ॥ १ ॥
सोरठ धारा देश मा, गढा रडो गिरनार। नित उठ यादव वादस्या, स्वामी नेम कुमार ॥ २ ॥
जो हुती चपो विरल, वा 'गिरनार पहार। फूलन हार गुथावती, चढती नेम कुमार ॥ ३ ॥
राजमती गिरवर चढी, ऊभी करै पुकार। स्वामी अवहु न वाहुडे, मो मन प्राण अधार ॥ ४ ॥
रे ससारी प्राणिया, चढ्यो न गढ गिरनार। गगा न्हाये न गोमती, गयो जमारो हार ॥ ५ ॥
धन वा राणी राजेमती, धन वे नेम कुमार। शील सयमता आदरी, पोंहता भव जल पार ॥ ६ ॥
दया गुणा की वेलडी, दया गुणा की खान। अनन्त जीव मुगतै गया, दया तणे परमाण ॥ ७ ॥
जग मे तीरथ दोय वडा, शत्रुजय गिरनार। इणगिर ऋषभ समोसरे, उणगिर नेम कुमार ॥ ८ ॥

अगर सेल्हारस सार, सुमति पूजा आठमी।
गधवटी घनसार लावो जिन तनु भावशुं ॥ १ ॥

॥ राग सोरठी ॥

कुंद किरण शशि ऊजलो जी देवा, पावन घन घनसारो जी।
आछो सुरभि शिखर मृग नाभिनो जी देवा, चुन्नरोहण अधिकारो जी ॥आ० १॥
वस्तु सुगंध जव मोरियो जी देवा, अशुभ करम चूरी जै जी ॥ आ० ॥
आंगण सुरतरु मोरियोजी देवा, तव कुमति जन खीजे जी।
(पाठांतरे) तव सुमती जन रीझैं जी ॥ २ ॥

॥ राग सामेरी ॥

पूजोरी माई जिनवर अंग सुगंधे।
गंधवटी वनसार उदारे, गोत्र तीर्थंकर बांधे ॥ पू० १ ॥
आठमी पूजा अगर सेल्हारस लावे जिन तनु रागे।
धार कपूर भाव घन वरपत, सामेरी मति जागे ॥ पू० २ ॥

—:※:—

॥ नवमी ध्वज पूजा ॥

मोहन ध्वज धर मस्तके, सूहव गीत समूल । दीजै तीन प्रदक्षिणा, नवमी पूज अमूल ॥

॥ राग मेघ गोडी वस्तु छंद ॥

सहस जोयण सहस जोयण हेममय दंड,
युतपताक पांचे वरण घुम घुमत घूघरी वाजै ।
मृदु समीर लहके गयण जाण कुमति दल सयल भाजै ॥
सुरपति जिम विरचे धजा ए, नवमी पूज सुरंग ।
तिण पर श्रावक ध्वज वहन, आपै दान अभंग ॥ १ ॥

॥ राग नट्टनारायण ॥

जिनराजको ध्वज मोहना, ध्वज मोहना रे ध्वज मोहना ॥ जि० ॥
मोहन सुगुरु अधिवासियो, करि पंच सबद त्रिप्रदक्षिणा ।
सधव वधू शिरसोहणा ॥जि०१॥
भांति वसन पांच वरण बन्यो री, विध करि ध्वजको रोहणा ।
साधु भणत नवमी पूजा नव पाप निवारण रोहणा ॥
शिव मंदिर कुं अधिरोहणा, जन मोह्यो नट्टनारायणा ॥जि०२॥

॥ दशमी आभरण पूजा ॥

॥ राग केदारा दोहा ॥

दशमी पूजा आभरण, रचना यथा अनेक। सुरपति जिम अंगेरचे, तिम श्रावक सुविवेक ॥

शिर सोहे जिनवर तणे, रयण मुकुट झलकंत। तिलक भाल अंगद भुजा, श्रवण कुंडल अतिकंत ॥

॥ राग अधरास वा गुंडमल्हार ॥

पांच पिरोजा नीलू लसणीया, मोती माणक लाल रसणीया, हीरा सोहे रे, मन मोहे रे।
धुनी चुनी पुलक करकेताना, जातरूप सुभग अंक अंजना, मन मोहे रे ॥ १ ॥
मौलि मुकुट रयणे जड्यो, काने कुंडल हारे अति जुगते जुड्यो, उरहारू रे मनवारू रे ॥ २ ॥
भाल तिलक वांहे अंगदा, आभरण दशमी पूजा मुदा, सुखकारू रे, दुखहारू रे ॥ ३ ॥

॥ राग केदारो ॥

प्रभु शिर सोहे, मुकुट मणि रयणे जड्यो।
अंगद वांह तिलक भालस्थल, यहु नीको कोन घड्यो प्र० ॥ १ ॥
श्रवण कुंडल शशि तरणि मंडल जीपे, सुरतरूसम अलंकर्यो।
दुखके दार चमर सिंहासण, छत्र शिर उवरि धर्‍यो, अलंकृत उचित वर्‍यो ॥ २ ॥

॥ एकादश फूलघर पूजा ॥

फूलघरो अति शोभतो, फूंदे लहके फूल।
महके परिमल महमहा, ग्यारमी पूज अमूल॥

॥ राग रामगिरी कालकिया ॥

कोज अंकोल रायवेलि नव मालिका, कुंद मचकुंद वर निचिकलु हारे अह० वि० ए।
तिलक दमणक दले मोगरा परिमल, कोमल पारधि पाडलू हा रे अ० पा० ए॥ १॥
प्रमुख कुसुमे रचे त्रिभुवनकु रुचे, कुसुम गेह विच तोरण, हा रे अ० तो० ए।
गुच्छ चन्द्रोदय झुमका उन्नय, जालिका गोख चित चोरणु हा रे अ० चो० ए॥ २॥

॥ राग रामगिरी ॥

मेरो मन मोह्यो माईरी, फूलघर आणंद मिलै।
असंत उसत दाम वधारी मनोहर, देखत तनही सब दुरित खिलै। फू० ॥ १ ॥
कुसुम मंडित थंभगुच्छ चन्द्रोदय, कोरणि चारु विनाण समै।
इग्यारमी पूज भणीहे रामगिरी विबुध विमाण जसे तिपुरि भजै। फू० ॥ २ ॥

॥ द्वादश पुष्पवर्षा पूजा ॥

वरणं बारमो पूजमें, कुसुम बादलिया फूल । हरण ताप दुख लोकको, जानु समा बहु मूल ॥

(राग भीममल्हार गुंडमिश्र, देशी कड़खानी)

मेघ वरसे भरी, पुष्फ बादल करी, जानु परिमाण करि कुसुम पगरं ।
पंच वरणे बन्यो, विकच अनुक्रम चण्यो, अधोवृंते नही पीड पसरं ॥ मे० ॥ १ ॥
वास महके मिले, भमर भमरी भिले, सरस रसरंग तिण दुख निवारी ।
जिनप आगे करे, सुरप जिम सुख वरे, बारमी पूज तिण पर अगारी । मे० ॥ २ ॥

॥ राग भीम मलार ॥

पुष्फ बादलीया वरसे सुसमां ॥ अहो पु० ॥
योजन अशुचिहर वरसे गंधोदक, मनोहर जानु समा ॥ पु० ॥ १ ॥
गमन आगमन की पीर नहीं तसु, इह जिनको अतिशय सुगुणे ।
गुंजत गुंजत मधुकर इम पभणे, मधुर वचन जिन गुण थुणे पु० ॥ २ ॥
कुसुम सुपरि सेवा जो करे, तसु पीर नहीं सुमणे ।
समवसरण पंचवरण अधोवृंत, विबुध रचे सुमना सुसमा पु० ॥ ३ ॥
बारमी पूज भविक निम करे, कुसुम विकसी हसी उभरे ।
तसु भीम बंधण अहरा हुवे, जे करे जै जै जिन नमा पु० ॥ ४ ॥

॥ त्रयोदशाष्टमांगलिक पूजा ॥

तेरमी पूजा अवसरे, मंगल अष्ट विधान ।
युगति रचे सुमते सहो, परमानन्द निधान ॥

॥ राग वसन्त ॥

अतुल विमल मिल्या, अखंड गुणे भिरया मालि रजत तणा तंदुला ए ।
श्लषण समानक, पंचविध वर्णक, चन्द्रकिरण जेसा उजला ए ॥ १ ॥
मेलि मंगल लिखे, सयल मंगल अखे, जिनप आगे सुथानक धरे ए ।
तेरमी पूजविधि, तेरमी मन मेरे, अष्टमंगल अष्टसिद्धि करे ए ॥ २ ॥

॥ राग कल्याण ॥

हांहो पूजा अणी तेरी रस में ।
अष्ट मंगल लिखे, कुशल निधान हे, तेज तरणके रसमें ॥ हां० ॥ १ ॥
दप्पण भद्रासण नंद्यावर्त्त पूर्णकुंभ, मच्छयुग श्रीवच्छ तसुमे ।
वर्धमान स्वस्तिक पूज मंगलकी, आनंद कल्याण सुखरसमें ॥ हां० ॥ २ ॥

॥ चतुर्दश धूप पूजा ॥

गंधवटी मृगमद अगर, सेल्हारस घनसार। धरि प्रभु आगल धूपणा, चउदमि अरचा सार ॥

॥ राग वेलावल ॥

कृष्णागर कपूर चूर, सोगंध पंचे पूर।
कुंदरुक सेल्हारस सार, गंधवटी घनसार॥
गंधवटी घनसार चंदन मृगमदा रस मेलिये।
श्रीवास धूप दशांग अंबर, सुरभि बहु द्रव्य मेलिये॥
वेरुलिय दंड कनक मंडे, धूपधाणो कर धरे।
भववृत्ति धूप करंति भोगं, रोग सोग अशुभ हरे॥ १ ॥

॥ राग मालवी गौडी ॥

सब अरति मथनमुदार धूपं, करति गंध रसाल रे॥ देवा, कर० ॥
धाम धूमावलीय धूसर, कलुप पानिक गाल रे॥ देवा, स० ॥ १ ॥
ऊर्ध्वगति सूचंत भविकुं, गंधमगे करनाल रे॥ दे० ॥
चौदमी वामांग पूजा, दीये रयण विशाल रे।
आरती मंगल माल रे, मालवी गौडी ताल रे॥ दे० स० ॥ २ ॥

॥ पञ्चदश गीत पूजा ॥

कंठ भले आलाप करि, गावो जिनगुण गीत।
भावो अधिकी भावना, पनरमी पूजा प्रीत॥

॥ श्री रागे आर्यावृतं ॥

यद्वदनतकेवल मनत फल भक्ति जैनगुणगान।
गुणवर्णनादवाप्ते, मात्राभाषालयैर्युक्त ॥ १ ॥
सप्त स्वरसगीते स्थानैर्जयतादि तालकरणैश्च॥
चचुरचारी चारै, गीत गान सुपीयूषं॥ २ ॥

॥ श्री राग ॥

जिनगुण गान श्रुत अमृत, तार मद्रादि अनाहत तान।
केवल निभ तिम फल अमृतं ॥ नि० ॥ १ ॥
विबुध कुमार कुमरी आलापे, मुरज उपाग नाद जनित।
पाठ प्रबध धुआप्रतिमान, आयति च्छद सुरति सुमित॥ २ ॥
शब्दसमान रच्यो त्रिभुवनकु, सुर नर गावे जिन चरितं।
सप्तस्वर मान शिवश्री गीतं, पनरमी पूजा हरे दुरित॥ जि०॥ ३ ॥

॥ षोडस नृत्य पूजा ॥

कर जोडी नाटक करे, सजि सुन्दर सिणगार ।
भव नाटक ते नवि भमे, सोलमो पूजा सार ॥

॥ राग शुद्ध नट्ट ॥

काव्यं ॥ शार्दूलविक्रीडितं वृत्तं ॥

माता दिप्पवणा सुचारु चरणा, सुपुन्न चंदानना,
सप्पिम्मासम रूव वेस वयसा, मत्तेभ कुंभत्थणा ।
लावण्णा सगुणा पिकस्स सरई, रागाइ आलावणा,
कुम्मारी कुमराचि जैनपुरओ, नच्चंति सिंगारणा ॥

॥ गाथा ॥

तएणं ते अठमयं कुमार कुमरीओ सूरियामेण देवेणं संदिट्ठा।
रंग मझे परिट्ठा णिणं नमता गायता वायता नच्चंति ॥

॥ रागनट्ट त्रिगुण ॥

नाचति कुमार कुमरी, द्रागडदि तत्ता थेइय।
द्रागडदि द्रागडदि थोंगनि थोंगनि मुखे तत्ता थेइय ॥ ना० ॥ १ ॥

वेणु वीणा मुरज गाजे, सोलही सिणगार साजे।
तनन्न न्ननानेइय, घणण घूघरी घमके, रणणंरणंणं णा णेइय ॥ ना० ॥ २ ॥

कसती कंचुकी तरुणी, भजरी झंकार करणी।
सोभति कुमरीय, हस्तकृत हावादि भावे, दन्ति भमरीय ॥ ना० ॥ ३ ॥

सोलमी नाटक पूजा, सुरीयाभे गवण कीनी।
सुगध तत्ता त्थेईय, जिनप भगते भविक लीणा, आणद तत्ता थेईय ॥ना०॥४॥

॥ सप्तदशमी वाजित्र पूजा ॥

ततघन सुषिरे आनधे, वाजित्र चउविध वाय ।
भगति भली भगवंतनो, सतरमो ए सुखदाय ॥

गाहा ॥ सुरमद्दल कंसालो, मद्दरय मद्दल सुवज्जए पणवो ।
सुरनारि नंदि तूरो, पभणेइ तूं नंदि जिणनाह ॥

॥ राग मधुमाधवी ॥

तूं नंदिआनंदि बोलत नंदी, चरण कमल जसु जगत्रय वंदी ।
ज्ञान निर्मल वापत मुख वेदी, त्रिवलि नोले रंग अनिंदी आनंदी ॥ तूं० ॥१॥
भेरी गयण वाजंती,कुमति त्याजंती;प्रभु भक्ति पसाये अधिक गाजंती।
सेवे जैन जयणावंतो, जैनशासन, जयवंत नंदंती ।
उदय संघ परिगरिय वदन्ती ॥ तूं ॥ २ ॥
सेवि भविक मधु माधवी आंखें उनफेरी, भविक न फेरी पभणंती ।
कहे साधु सतरमी पूज वाजित्र सब, मंगल मधुर धुनिकर कहंती॥ तूं०॥ ३ ॥

॥ कलश—राग धनाश्री ॥

भवि तु भण गुण जिनके सब दिन, तेज तरणि मुख राजै ।
कवि शतक आठ गुणत शक्रस्तव, युग युग रंगैं हम छाजै ॥भ० ॥१॥
अणहिलपुर शांतिशिव सुखदाई, नवनिधि रिधि सिद्धि वाजै ।
सतर सुपूज सुविधि श्रावककी भणी मैं भगति हित काजै ॥ भ० ॥२॥
श्री जिनचन्द्रसूरि खरतर पति, धरम वचन तसु राजै ।
संवत सोल अढार श्रावण धुरि, पंचमी दिवस समाजै ॥ भ० ॥३॥
दयाकलश गुरु अमरमाणिक्य वरे, तासु पसाये सुविध हुइ गाजै ।
कहे साधुकीरति करत जिन संस्तव, सब लीला सुख साजै ॥ भ० ॥४॥

— ❀ —

॥ श्री गौतम स्वामी का बड़ा रास ॥



वीर जिणेसर चरण कमल कमलाकय वासो, पणमवि पभणिसु सामी साल गोयम गुरु रासो ।
मण तण वयणे एकंद करवि निसुणहु भा भविया, जिम निवसे तुम देह गेह गुण गण गह गहिया ॥१॥
जंबुदीव सिरि भरहखित्त खोणी तलमंडण, मगह देस सेणिय नरेस रिउदल बल खंडण ।
धणवर गुव्वर गाम नाम जिहां गुण गण सज्जा, विप्प वसे वसुभूइ तत्थ तसु पुहवी भज्जा ॥२॥
ताण पुत्त सिरइंद भूय भूवलय पसिद्धो, चवदह विज्जा विविहरूप नारी रस लुद्धो ।
विनय विवेक विचार सार गुण गणह मनोहर, सात हाथ सुप्रमाण देह रूवहि रंभावर ॥३॥
नयण वयणकर चरण जणवि पंकज्जल पाड़िय, तेजहि तारा चन्द सूरि आकास भमाडिय ।
रूवहि मयण अनंग करवि मेल्यो निरधाडिय, धीरम मेरु गंभीर सिंधु चंगम चय चाडिय ॥४॥

पेखवि निरुवम रूव जास जण जपे किंचिय, एकाकी किलभीत्त इत्थ गुण मेल्या संचिय।
अहवा निचय पुव्व जम्म जिणवर इण अंचिय, रंभा पउमा गवरि गंग रतिहा विधि वंचिय॥५॥
नय बुध नय सर कविण कोय जसु आगल रहियो, पंच सया गुण पात्र छात्र हींडे परवरियो।
करय निरन्तर यज्ञ करम मिथ्यामति मोहिय, अण चल होसे चरम नाण दंसणह विसोहिय॥६॥

वस्तु—जबूदीव जबूदीव भरहवासम्मि खोणी तल मडण, मगह देस सेणिय नरेसर, वर गुव्वर गाम तिहा, विप्प वसे वसुभूइ, सु दर तसु पुहवि भज्जा, सयल गुण गण रूव निहाण, ताण पुत्त विज्जा निलो गोयम अति ही सुजाण॥७॥

भास—
चरम जिनेसर केवल नाणी, चौविह संघ पइट्ठा जाणी।
पावापुर सामी संपत्तो, चउविह देव निकायहिं जुत्तो॥८॥
देवहि समवसरण तिहा कीजे, जिण दीठे मिथ्यामत छीजे।
त्रिभुवन गुरु सिंहासण बैठा, ततखिण मोह दिगंत पइट्ठा॥९॥
क्रोध मान माया मदपूरा, जाये नाठा जिम दिन चोरा।
देव दुन्दुभि आगासे वाजी, धरम नरेसर आव्यो गाजी॥१०॥

इण अनुक्रम गणहर रयण थाप्या वीर इग्यार तो,
तो उपदेशे भुवन गुरु संयम शुं व्रत बार तो।
बहुँ उपवासे पारणो ए आपण पे विहरंत तो,
गोयम संयम जग सयल जय जयकार करंत तो ॥ २२ ॥

वस्तु—इन्द्रभूइ इन्द्रभूइ चढियो बहुमान हुँकारो करि कंपतो, समवसरण पहुँतो तुरंतो।
जे संसा सामि सवे, चरम नाह फेड़े फुरंत तो। बोध बीज सज्ञायमने, गोयम भवहि
विरत्त। दिक्ख लेई सिक्खा सहो, गणहर पय संपत्त ॥ २२ ॥

आज हुओ सुविहाण आज पचेलिमां पुण्य भरो, दीठा गोयम सामी जो नियनयणें अमियभरो।
समवसरण मंझार जे जे संसा ऊपजे ए, ते ते पर उपगार कारण पूछे मुनि पवरो ॥ २३ ॥
जिहां दीजे दीख तिहां केवल उपजे ए, आप कनें अणहुंत गोयम दीजे दान इम।
गुरु ऊपर गुरु भक्ति सामी गोयम ऊपनिय, अणचल केवल नाण रागज राखे रंग भरे ॥ २४ ॥
जो अष्टापद सेल वंदे चढ़ चउविस जिण, आतम लब्धि वसेण चरम सरीरी सोज मुनि।
इय देसणा निसुणेइ गोयम गणहर संचरिय, तापस परसएण जो मुनि दीठो आवतो ए ॥ २५ ॥

तपसी सियनिय अग अहा सगति न ऊपजे ए, किम चढसे दृढ काय गज जिम दीसे गाजती ए।
गिरुओ ए अभिमान तापस जो मन चिन्तवे ए, तो मुनि चढिओ वेग आलवबि दिनकरकिरण ।२६।

कंचण मणिनिप्पन्न दंड कलश ध्वज वण सहिय, पेखवि परमाणद जिणहर भरतेसर महिय।
नियनियकायप्रमाण चिहु दिसि सठियजिणहबिम्ब, पणमवि मनउल्लास गोयम गणहर तिहां वसिय।

वयर सामिनो जीव तिर्यक् जृंभक देव तिहां, प्रतिबोध्या पुंडरीक कुंडरीक अध्ययन भणी।
वलता गोयम सामी सवि तापस प्रतिबोध करे, लेई आपण साथ चाले जिम जथाधिपति ॥ २८ ॥

खीर खाण्ड घृत आण अमिय बूठ अगूठ ठवे, गोयम एकण पात्र करावे पारणो सवे।
पचसया शुभ भाव उज्ज्वल भरियो खीर मिसे, साचा गुरु सयोग कवल ते केवल रूप हुआ ॥ २९ ॥

पच सया जिण नाह समवसरण प्राकार त्रय, पेखवि केवल उपन्नो उज्जोय फर।
जाणे जणवि पीयूष गाजती घन मेघ जिम, जिन वाणी निसुणे वि नाणी हुआ पचसया ॥ ३० ॥

वस्तु—इण अनुकम इण अनुक्रम नाण पन्नरे से उप्पन्न परिवरिय, हरिदुरिय जिणनाह वदइ,
जाणेवि जग गुरु वयण, तिहिं नाण अप्पाण निंदइ। चरम जिनेसर इम भणे, गोयम म
करिस खेव, छेह जाय आपण सही, होस्या तुल्ला बेव ॥ ३१ ॥

भास —

सामियो ए वीर जिणंद पूनम चंद जिम उल्लसिय,
विहरियो ए भरह वासंमि वरस वहत्तर संवसिय।
ठवतो ए कणय पउमेण पायकमल संघे सहिय,
आवियो ए नयनान्द नयर पावापुर सुरमहिय॥ ३२॥

पेखियो ए गोयमसामी देवसमा प्रतिबोध करे,
आपणो ए त्रिशलादेवी नंदन पुहतो परम पए।
चलतो ए देव आकाश पेखवि जाण्यो जिण समे ए,
तो मुनि ए मन विखवाद नाद भेद जिम ऊपनो ए॥ ३३॥

इण समे ए सामिय देखि आप कनासूं टालियो ए,
जाण तो ए तिहु अणनाह लोक विवहार न पालियो ए।
अतिभलो ए कीधलो सामी जाण्यो केवल मांग से ए,
चिन्तव्यो ए बालक जेम अहवा केडे लाग से ए॥ ३४॥

हूं किम ए वीर जिणन्द भगत हिं भोले भोलव्यो ए,
आपणो ए ऊँचलो नेह नाह न संपे साचव्यो ए।
सांचो ए ए वीतराग नेह न हेजें टालियो ए,
तिण समे ए गोयम चित्त राग वैरागे वालियो ए॥ ३५॥

आवतो ए जो उत्लट्ट रहिनो रागे साहियो ए,
केवल ए नाण उप्पन्न गोयम सहज उमाहियो ए।
तिहु अण ए जय जयकार केवल महिमा सुर करे ए,
गणधर ए करय वखाण भविया भव जिम निस्तरे ए ॥ ३६ ॥

वस्तु—पढम गणहर पढम गणहर वरस पञ्चास, गिहवासे संवसिय तीस वरस संजम विभूसिय,
सिरि केवल नाण पुण, बार वरस तिहु अण नमसिय, राजगृहो नयरी ठव्यो, बाणवइ
वरसाउ, सामी गोयम गुण निलो होसे सिवपुर ठाउ ॥ ३७ ॥

भास— जिम सहकारे कोयल टहुके, जिम कुसुमावन परिमल महके, जिम चदन सौगध निधि।
जिम गंगाजल लहरयां लहके, जिम कणयाचल तेजे झलके, तिम गोयम सौभाग निधि ॥ ३८ ॥
जिम मान-सरोवर निवसे हंसा, जिम सुर तरुवर कणयवतंसा, जिम महुयर राजीव वने।
जिम रयणायर रयण विलसे, जिम अबर तारागण विकसे, तिम गोयम गुरु केल घने ॥ ३६ ॥
पूनम निसि जिम ससियर सोहे, सुर तरु महिमा जिम जग माहे, पूरव दिसि जिम सहस करो।
पचानन जिम गिरिवर राजे, नर वइ घर जिम मगल गाजे, तिम जिनशासन मुनि पवरो ॥ ४० ॥

जिम गुरु तरुवर सोहे शाखा, जिम उत्तम मुख मधुरी भाषा, जिम वन केतकि महमहे ए।
जिम भूमीपति भुयबल चमके, जिम जिन मंदिर घंटा रणके, गोयम लब्धे गह गह्यो ए॥ ४१॥

चिन्तामणि कर चढियो आज, सुर तरु सारे वंछिय काज, काम कुंभ सहुवशि हुआ ए।
काम गवी पूरे मन कामी, अष्ट महा सिद्धि आवे धामी, सामी गोयम अणुसरी ए॥ ४२॥
प्रणव अक्षर पहलो पभणीजे, माया बीजो श्रवण सुणीजे, श्रीमिति साभा संभवो ए।
देवा धुर अरिहंत नमीजे, विनय पहू उवझाय थुणीजे, इण मंत्रे गोयम नमो ए॥ ४३॥

पर घर वसतां काय करीजे, देश देशान्तर काय भमीजे, कवण काज आयास करो ए।
प्रह उठी गोयम समरीजे, काज सम्मंगल ततखिण सीझे, नव निधि विलसे तिहांघरे ए॥ ४४॥

चवदय सय बारोत्तर वरसे, गोयम गणहर केवल दिवसे, कीयो कवित उपगार परो।
आदहिं मंगल ए पभणीजे, परव महोच्छव पहलो दीजे, ऋद्धि वृद्धि कल्याण करो॥ ४५॥
धन्न माता जिण उयरे धरियो, धन्य पिता जिण कुल अवतरियो, धन्य सुगुरु जिण दीखिओ ए।
विनयवंत विद्या भंडार, तसु गुण पुहवी न लब्भइ पार, वड जिम शाखा विस्तरो ए।
गोयम स्वामी नो रास भणीजे, चउविह संघ रलियावत कीजे ऋद्धि वृद्धि कल्याण करो॥ ४६॥

कुंकुम चंदन छडो दिवरावो माणक मोती ना चोक पुरावो, रयण सिंहासन वेसणो ए।
तिहां वेठो गुरु देशना देशी, भविक जीवना काज सरेसी, नित नित मंगल उदय करो ॥ ४७ ॥

राग प्रभाती जे करे, प्रह ऊगमते सूर। भूख्या भोजन सपजे, कुरला करे कपूर ॥ १ ॥
अंगूठे अमृत वसे, लब्धि तणा भंडार,। जे गुरु गौतम समरिये, मन वांछित दातार ॥ २ ॥
पुंडरीक गोयम पमुहा, गणधर गुण सम्पन्न। प्रह उठीने प्रणमता, चवदेसे बावन्न ॥ ३ ॥
खंतिखमगुण कलिय, सुविणियं सव्वलद्धिसंपण्णं। वीरस्सपढमसीसं गोयमसामी नमसामी ॥ ४ ॥
सर्वानिष्ट प्रणाशाय, सर्वाभिष्टार्थ दायिने। सर्वलब्धि निधानाय गौतमस्वामिने नमः ॥ ५ ॥

—※—

॥ दादा गुरुदेव की पूजा ॥



(पहले स्थापना करके नीचे लिखा आह्वान् का श्लोक पढ़े)

सकलगुणगरीष्ठान्सत्तपोभिर्वरिष्ठान्, शम दमयमयुष्टांचारुचारित्रनिष्ठान् ।
निखिल जगत पीठे दर्शितात्म प्रभावान्, मुनिपकुशल* सूरीन्स्थापयाम्यत्रपीठे ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजिनदत्त श्रीमणिधर जिनचन्द्र श्री जिनकुशल श्री जिनचन्द्रसूरि गुरो अत्रावतरावतर स्वाहा: ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्री जिनदत्त श्री श्री मणिधर जिनचन्द्र श्री जिन कुशल श्री जिनचन्द्रसूरिः अत्र तिष्ठः ठः ठः ठः स्वाहाः ॥ इति प्रतिष्ठापनं ॥

ॐ ह्रीं श्रीं श्री जिनदत्त श्री मणिधर जिनचन्द्र श्री जिनकुशल श्री जिनचन्द्रसूरि गुरो अत्रमम सन्निहितो भववपट् (इति संनिधि करणं) ॥

---

* दत्त

॥ अथ न्हवण पूजा ॥

(स्नात्रिया शुचि होकर जल का कलश लेकर खडा होवे)

ईश्वर जग चिन्तामणि , कर परमेष्ठी ध्यान। गणधर पद गुण वर्णना, पूजन करो सुजान ॥१॥
सौधर्मा मुनिपति प्रगट, वीर जिनेश्वर पाट। मिथ्या मत तम हरन को, भव्य दिखावन वाट ॥२॥
सुथित सुप्रतिबद्ध गुरु, सूरि मन्त्र को जाप। कोटिकियो जब ध्यानधर, कोटिक गच्छ सुथाप ॥३॥
दश पूर्वी श्रुत केवली, भये वज्रधर स्वाम। तादिन से गुरु गच्छ को, वज्र शाख भयो नाम ॥४॥
चन्द्रसूरि भये चन्द्रसम, अतिही बुद्धि निधान। चन्द्रकुली सब जगत में, पसरयो बहु विज्ञान ॥५॥
वर्द्धमान के पाट पद, सूरि जिनेश्वर भाम। चैत्यवासि को जीत कर, सुविहितपक्ष प्रकाश ॥६॥
अणहिलपुर पाटण सभा, लोक मिले तहाँ लक्ष। खरतर बिरुद सुधा निधि, दुर्लभ राज समक्ष ॥७॥
अभयदेवसूरि भये, नव अङ्ग टीका कार। थभण पारस प्रगट कर, कुष्ट मिटावन हार ॥८॥
श्री जिनवल्लभसूरि गुरु, रचना शास्त्र अनेक। प्रतिबोधे श्रावक बहुत, ताके पट्ट विशेष ॥९॥
हुम्बड श्रावक वागड़ी, अट्ठारे हजार। जैन दया धर्मी किये, बरते जय जय कार ॥१०॥
दादा नाम विख्यात जस, सुर नर सेवक नाम। दत्त सूरि गुरु पूजता, आनन्द हर्ष उल्लास ॥११॥
मदनपाल दिल्लीश ने, हुक्म उठाया शीस। मणिधारी जिनचन्द्र गुरु, पूजो विश्वा वीस ॥१२॥

ताके पट्ट परम्परा, श्री जिनकुशलसुरिंद। अकबर को परचा दिया, दादा श्री जिनचन्द ॥१३॥
ऐसे दादा चार को, पूजो चित्त लगाय। जलचन्दन कुसुमादिकर, ध्वज सौगन्ध चढ़ाय ॥१४॥

(चाल—दादा चिरञ्जीवो)

गुरुराज तणी कर पूजन भवि सुखकर मिलसी लच्छि घणी ॥ टेक ॥
गुरुदत्त सुरिंद जग उपकारी, गुरु सेवक ने सानिधकारी। गुरु चरण कमलनी बलिहारी, गु० ॥१॥
[1]संवत इग्यारे बार शशि, बत्तीसे जनम्या शुभ दिवसी। श्रावक कुल हुम्बड ने हुलसी, गु० ॥२॥
जसु वाछगसा पितु नाग भणो, वाहड़दे माता हर्ष घणो। इकतालीसे दीक्षा पभणो, गु० ॥३॥
गुणहतरे वल्लभ पाटधरी, गुरु माया बीजनो जाप करी। गुरु जग में प्रगट्या तरण तरी, गु० ॥४॥
मणिधारी जिनचन्द उपगारी, जिनदत्त सुरिंद के पटधारी। भये दादा दूजा सुखकारी, गु० ॥५॥
राशल पितु देल्हणदे माता, श्रीमाल गोत्र बोधन शाता। दिल्लीपति शाह सुगुण गाता, गु० ॥६॥
जसु चौथे पाट उद्योतकरी, जिनकुशलसुरिंद अति हर्ष भरी। [2]तेरे सैंतीसे जनम धरी, गु० ॥७॥
जसु जिल्ला जनक जगत्र जियो, वर जैंतश्री शुभ स्वप्न लियो। छाजेहड़ गोत्र उद्धार कियो, गु० ॥८॥
[3]धन सैंतालीसे दीक्षा धरी, जिनचन्द सुरीश्वर पाट वरी। गुणहतरे सूरि मन्त्र जापकरी गु० ॥९॥

१. ११३२ चंद्रवार   २. ११३७   ३. १३४७

सेवा में नावन वीर परा, जोगनियों चौसठ हुक्म धरा। गुरु जग में कई उपकार करा, गु० ॥१०॥
माणिक्यसूरीश्वर पट छाजे, जिनचन्द्रसूरि जग में गाजे। भये दादा चौथा सुखकाजे, गु० ॥११॥
जिन चाँद उगायो उजियालो, अम्मावस की पूनम वालो। सब श्रावक मिल पूजन चालो, गु० ॥१२॥
जिन अकबर को परचा दीना, काजी की टोपी वस कीना। बकरी का भेद कहा दीना, गु० ॥१३॥
गंधोदकसुरभि कलश भरी, प्रक्षालन सद्गुरु चरणपरी, या पूजन कवि 'ऋद्धिसार' करी, गु० ॥१४॥

श्लोक— सुरनदीजलनिर्मल धारकैः, प्रबलदुष्कृत-दायनिवारकैः।
सकल मङ्गलवाञ्छित दायक, कुशलसूरिगुरोश्चरणौयजे ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्री परमपुरुषाय परमगुरुदेवाय भगवतेश्री जिनशासनोद्दीपकाय श्रीजिनदत्तसूरीश्वराय मणिमण्डित भालस्थल श्री जिनचन्द्रसूरीश्वराय श्री जिनकुशल सूरीश्वराय अकबर असुरत्राणप्रतिबोधकाय श्री जिनचन्द्रसूरीश्वराय जल निर्वपामिते स्वाहा।

— ❀ —

॥ अथ केशर चन्दन पूजा ॥

केशर चंदन मृगमदा, कर घनसार मिलाप ।
परचा जिनदत्तसूरि का, पूज्यां छूटे पाप ॥ १ ॥

(चाल विन वाजे की)

दीन के दयाल राज सार सार तूं ॥ टेर ॥

आये भरुअच्छनग्र धाम धूम धूं । वाजते निशान ठौर, हर्ष रंग हूं ॥ १ ॥
मुसलमान मुगलपूत, फौज मौज मूं । फौत मौत हो गया, हायकार सूं ॥ २ ॥
सन्न विन्न देख आप, हुक्म दीन यूं । लाओ मेरे पास आस जीव दान दूं ॥ ३ ॥
मृतक पूत मंत्र से उठाय दीन तूं । देख के अचंभ रंग दास खास कूं ॥ ४ ॥
करत सेव भाव पूर, तुरक राज जूं । छोड़ के अभक्ष खाण, हाजरी भरूं ॥ ५ ॥
बीज खीज के पड़ी, प्रतिक्रमण के मूं । हाथ से उठाय पात्र ढांक दीन कूं ॥ ६ ॥
दामनी अमोल वोल, सिद्ध राज तूं । देऊँ वरदान छोड़, वन्द कीन क्यूं ॥ ७ ॥

दत्त नाम जपत जाप, करत नाहिं चू। फेर में पड़ूगी नाहिं छोड़ दीन फूं॥ ८॥
करोगे निहाल आप, पाव पलरु नू। राम ऋद्धि-सार दास, चरण छाँह लू॥ ९॥

मलयचन्दनकेशरवारिणाः निखिलजाड्य रुजातपहारिणा।
सकलमङ्गलवाँच्छितदायकं कुशलसूरिगुरोश्चरणौयजे॥ १॥

ॐ ह्रीं श्री परमपुरुषाय परम गुरुदेवाय भगवतेश्री जिनशासनोद्दीपकाय श्रीजिनदत्तसूरीश्वराय मणिमण्डित भालस्थल श्री जिनचन्द्रसूरीश्वराय श्री जिनकुशल सूरीश्वराय अकबर असुरत्राणप्रतिबोधकाय श्री जिन चन्द्रसूरीश्वराय केशरचंदननिर्विपामते स्वाहा।

— ❀ —

॥ अथ पुष्प पूजा ॥

चंपा चमेली मालती, मरुआ और मचकुंद । जो चाढ़े गुरु चरण पर, तिन घर होय आनन्द ॥

(राग माड, चाल—नींद तो गई रे वादीला म्हारी)

गुरु परतिक सुरतरु रूप सुगुरुसम दूजो तो नहीं । दूजो तो नहीं, म्हारा दूजो तो नहीं ।

गुरुपरतिखसुरतरुरूप, सुगुरुने पूजो तो सही ॥ टेर ॥

चित्तौड़ नगरी वज्र खम्भ में, विद्या पोथी रही । मन्त्र यन्त्र विद्यासे पूरी, गुरु निज हाथ ग्रही ॥ १ ॥

पुर उज्जयनी महाकालके, मन्दिर थम्भ कही । सिद्धसेन दिनकर की पोथी, विद्या सर्व लही ॥ २ ॥

उज्जयनी व्याख्यान बीच में श्राविका रूप ग्रही । जोगनियाँ छलणे कूं आई, सबकूं कील दई ॥ ३ ॥

दीन होय जोगनियाँ चौसठ गुरु की दास भई । सात दिया वरदान हरष सें, पसर्या सुयश मही ॥ ४ ॥

पुष्प-माल गुरु गुण की गूंथी, चाढ़ो चित्त चही । कहे 'राम ऋद्धिसार' सुयश की, बूंटी आप दई ॥ ५ ॥

कमल चम्पक केतकी पुष्पकै, परिमलाहृतषट्पदवृन्दकैः ।

सकल मङ्गलवाँछितदायकं, कुशलसूरिगुरोश्चरणौयजे ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषायपरमगुरुदेवाय भगवते श्रीजिनशासनोद्दीपकाय, श्रीजिनदत्तसूरीश्वराय मणिमण्डित भालस्थल श्रीजिनचन्द्रसूरीश्वराय श्रीजिनकुशल सूरीश्वराय अकबर असुर त्राणप्रति-बोधकाय श्री जिनचन्द्रसूरीश्वराय पुष्पंनिर्विपामिते स्वाहाः ।

॥ अथ धूप पूजा ॥

धूप पूज कर सुगुरु की, परसे परिमल पूर। यशसुगन्ध जग में बढ़े चढ़े सवाया नूर ॥ १ ॥

॥ राग सोरठा ॥

(चाल—कुनजाने जादू डारा)

अम्बिका विरद बखाने, गुरु तेरो अम्बिका विरद बखाने। तुम युगप्रधान नहीं छाने, गुरु तेरो ॥टेक॥

गढ़ गिरनारपे अम्बड श्रावक, ऐसो नियम चित्त ठाने।
युगप्रधान इस युग मे कोई, देखूं जन्म प्रमाने ॥ गु० १ ॥

कर उपवास तीन दिन वीते, प्रगटी अम्बा छाने।
प्रगट होय कर मे लिख दीना, सुवरण अक्षर दाने ॥ २ ॥

या गुण संयुत अक्षर वाँचे, ताकूँ युगवर जाने।
अम्बड मुलक मुलक मे फिरता, सूरि सकल पतियाने ॥ ३ ॥

आया पास तुम्हारे सद्गुरु, कर पसार दिखलाने।
वासक्षेप कर ऊपर डाला, चेला बाँध सुनाने ॥ ४ ॥

सर्व देव हैं दास जिन्होंके, मरुधर कल्प प्रमाने।
युगप्रधान जिनदत्तसूरीश्वर, अम्बड शीश झुकाने ॥ ५ ॥

उद्योतनसूरीने निज हाथे, चौरासी गच्छ ठानें।
वह सब तुमरी सेवा सारें, आन तुम्हारी मानै ॥ ६ ॥

भद्रबाहु स्वामी तुम कीर्तन, कीनो ग्रंथ प्रमाने।
युगप्रधान प्रकीर्ण गंडिका, गणधर-पद-वृत्ति म्याने ॥ ७ ॥

जो जन तुमको भक्ति से पूजे, हों उनके मनमाने।
कहे 'राम ऋद्धिसार' गुरु की पूजा धूप कराने ॥ ८ ॥

श्लोक— अगरचन्दन धूपदशांगजैः, प्रशारिताखिलदिक्तुसुधूम्रकैः।
सकलमंगलवांच्छित दायकं, कुशलसूरिगुरौचरणौयजे ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुपाय परमगुरुदेवाय भगवते श्रीजिनशासनोद्दीपकाय श्रीजिनदत्तसूरीश्वराय मणिमण्डित भालस्थल श्री जिनचन्द्रसूरीश्वराय श्री जिनकुशलसूरीश्वराय अकबर असुर त्राणप्रति-बोधकाय श्री जिनचन्द्रसूरीश्वराय धूपंनिर्विपामिते स्वाहाः ॥ ४ ॥

॥ अथ दीप पूजा ॥

दीप पूजकर सुगुण नर, नित नित मगण होत । उजियालो जगमें जुगत, रहे अखंडित जोत ॥

(राग—कालिंगडा)

पूजन कीजोजी नर नारी, गुरु महाराज का हो ॥ टेर ॥

सिंधु देश में पंच नदी पर, साधे पांचो पीर । लोई ऊपर पुष्प तिराये, ऐसे गुरु सधीर ॥१॥
प्रकट होय कर पांच पीर ने, मात दिये वरदान । सिंधु देश मे खरतर श्रावक, होवेगा धनवान ॥२॥
सिंधु देश मुलतान नगर में, बड़ा महोत्सव देख । अम्बड श्रीरगच्छ का श्रावक, गुरु से कीना द्वेष ।
अणहिलपुर पत्तन मे आओ, तो मैं जानूं सच्चा । धर्मध्वजा फहराते आवे, देखलीजियो बच्चा ।४।
पत्तन बीच पधारे दादा, डंका धर्म बजाया । निर्धन अम्बड़ सन्मुख आया, अहंकार फलपाया ।५।
मन में कपट किया अबडने, खरतर महिमाधारी । जहर दिया उन अशनपानमें, गुरु विधिजानि सारी ।
भणसाली मुनवर श्रावकसे, निर्विषमुद्री मगाई । जहर उतारा तवलोगों में अम्बड निंदा पाई ।७।
मरकर व्यंतर हुआ वो अम्बड, रजोहरणहर लीना । भनशाली व्यंतर वचनों से गोत्र उतारा कीना ।८।
प्रत्यक्ष होयगुरु ओघा लेकर, गोत्र बचाया सारा । 'ऋद्धिसार' महिमा सद्गुरु की, दीपकका उजियारा ।६।

श्लोक— अतिसुदीप्तमयैःखलुदीपकैः, विमलकंचन भाजनसंस्थितैः ।
सकलमङ्गलवाञ्छितदायकं, कुशलसूरिगुरोश्चरणौयजे ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय परमगुरुदेवाय दीपंनिर्विपामिते स्वाहा ॥ ५ ॥

॥ अथ अक्षत पूजा ॥

अक्षत पूजा गुरुतणीं, करो महाशय रङ्ग। क्षति न होवे अंग में, पाओ सुक्ख अभङ्ग ॥

(राग—आसावरी)

रतन अमोलक पायो, सुगुरू सम रतन०। गुरु संकट सब हीं मिटायो ॥ टेर ॥

विक्रमपुर नगरी लोकनको हैजा रोगसतायो। बहुत उपायकिया शांतिका जरा फरक नहिं आयो।
योगी जंगम ब्रह्म संन्यासी, देवी देव मनायो। फरक नहीं किनही ने कीना, हाहाकार मचायो ॥
रतन चिंतामणिसरिखो साहिब, विक्रमपुर में आयो। जैनसंघका कष्ट दूरकर जयजयकारकरायो।
महिमा सुन माहेश्वर ब्राह्मण,सब ही शीस नमायो। जीवितदान करो महाराजा गुरु तबयों फरमायो॥
जो तुम समकित व्रत को धारो, अबहीं करदूँ उपायो।तहत्तवचनकर रोग मिटायों, आनंदहर्ष वधायो।
जो कोई श्रावकव्रत को न धार्यो; पुत्री पुत्र चढ़ायो। साधु पाँचसौ दीक्षित कीना, साधवियाँ समुदायो॥
मंत्र कला गुरुअतिशय धारी, एमो धम्मं दिपायो। 'ऋद्धिसार' पर किरपा कीनी, सांचो पथ बतलायो॥

श्लोक— सरलतन्दुलकैरति निर्मलैः, प्रवरमौक्तिक पुञ्जवदुज्वलैः।
सकलमङ्गलवाँच्छितदायकं, कुशलसूरिगुरोश्चरणौयजैः ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय परमगुरूदेवाय भगवते श्रीजिनशासनोद्दीपकाय श्री जिनदत्तसूरीश्वराय मणिमण्डितभालस्थल श्री जिनचन्द्रसूरीश्वराय श्री जिनकुशलसूरीश्वराय अकबर असुरत्राणप्रतिबोधकाय श्रीजिनचन्द्रसूरीश्वराय अक्षतं निर्विपामिते स्वाहाः ॥ ६ ॥

॥ अथ नैवेद्य पूजा ॥

नैवेद्य पूजा सतमी, करो भविक चित चाव। गुरुगुण अगणित किम गिने, गुरुभव तारणनाव।१।

॥ राग—कल्याण ॥

(चाल—तेरी पूजा बनी है रस मे)

हो गुरु किया असुर को वश में ॥ टेर ॥

वडनगरी मे आप पधारे, सामेला धसमसमे।
ब्राह्मणलोग करी पञ्चायत, मिलकर आया सुस मे ॥ १ ॥

महिमा देख सके नहीं गुरु की, भर गये वह तो गुस मे।
मृतक गऊ जिन मन्दिर आगे, रख दी सन्मुख चस मे ॥ २ ॥

श्रावक देख भये आकुलता, कहे गुरु से कस मे।
चिन्ता दूर करी है सघ की, गऊ उठ चाली डस मे ॥ ३ ॥

मरी गऊ को जीती कीनी, लोग रहे सब हँस मे।
जाके गाय पड़ी रुद्रालय, सघ भया सब खुश मे ॥ ४ ॥

ब्राह्मण पाँव पड़े अब गुरू के, देख तमाशा इसमें।
हुक्म उठावेंगे सिर ऊपर, तुम संतति की दिशा में ॥ ५ ॥
नमस्कार है चमत्कार को, कीनी पूजा रस में।
कहे 'राम ऋद्धिसार' गुरू की, आनन्द मंगल यशमें ॥ ६ ॥

बहुविधैश्चरुभिर्वटकैर्यकै, प्रचुरसर्पिपिपक्वसुखज्जकैः ।
सकलमङ्गलवांच्छितदायकं, कुशलसूरिगुरोश्चरणौयजे ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुपाय परमगुरूदेवाय भगवते श्रीजिनशासनोद्दीपकाय श्रीजिनदत्तसूरीश्वराय मणिमण्डितभालस्थल श्रीजिनचन्द्रसूरीश्वराय श्री जिनकुशलसूरीश्वराय अकवर असुरत्राण-प्रतिबोधकाय श्रीजिनचन्द्रसूरीश्वराय नैवेद्यं निर्विपामिते स्वाहाः ॥ ७ ॥

—:❀:—

॥ अथ फल पूजा ॥

फल पूजा से फल मिले,प्रगटे नवे निधान । चहुँ दिश कीरत विस्तरे, पूजन करो सुजान ॥१॥

॥ राग—ठुमरी ।

(चाल—रथ चढ़ यदुनन्दन आवत हैं)

चलो सब सब पूजन को, गुरुसमर्या सन्मुख आवत हैं ॥ टेर ॥

आनन्दपुर पट्टन को राजा, गुरू महिमा सुन पावत हैं।
भेजा निज प्रधान बुलाने, नृप अरदास सुनावत हैं ॥ १ ॥

लाभ जान गुरू नगर पधारे, भूपत आय वधावत हैं।
राजकुमार को कुष्ट मिटायो, अचरज तुरत दिखावत हैं ॥ २ ॥

दस हजार कुटम्ब संग नृप को, श्रावक धर्म धरावत हैं।
प्रतापगढ को पमार राजा, पुर में गुरू पधरावत हैं ॥ ३ ॥

दया मूल आज्ञा जिनवर की, बारह व्रत उचरावत हैं।
चौहान भाटी पमार ईंदा, पुन राठौड़ सुहावत हैं ॥ ४ ॥

शिशोदिया सोलंकी नरवर, महाजन पदवी पावत हैं।
ऐसे सात राज समकितधर, खरतर संघ बनावत हैं ॥ ५ ॥
कुष्ट जलन्धर क्षयन भगन्दर, कइ एक लोक जीवावत हैं।
ब्राह्मण क्षत्री अरू माहेश्वर, ओसवंश पसरावत हैं ॥ ६ ॥
तीस हजार एक लख श्रावक, खरतर संघ रचावत हैं।
कहत 'राम ऋद्धिसार' गुरूकी, फल पूजा फल पावत हैं ॥ ७ ॥

पनस मोचसदाफलकर्कटैः, सुसुखदैकिलश्रीफलचिर्भटैः।
सकलमङ्गलवाँच्छितदायकं, कुशलसूरिगुरोश्चरणौयजै ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय परमगुरूदेवाय भगवतेश्री जिनशासनोद्दीपकाय श्रीजिनदत्त सूरीश्वराय मणिमण्डितभालस्थल श्री जिनचन्द्रसूरीश्वराय श्री जिनकुशलसूरीश्वराय अकबर असुर त्राणप्रतिबोधकाय श्री जिनचन्द्रसूरीश्वराय फलंनिर्विपामिते स्वाहाः ॥ ८ ॥

—:*:—

॥ अथ वस्त्र पूजा ॥

वस्त्र छत्र गुरुपूजना, चोवा चन्दन फूलेल । दुश्मन सब सज्जन हुए, कर सुरंगा खेल ॥ १ ॥

॥ देशी (चाल—मनडो किमही न थाजे) ॥

लक्ष्मी लीला पावेरे सुन्दर, ल० । जे गुरु वस्त्र चढावेरे सुन्दर, ल० ॥
सुयश अतर महकावेरे सुन्दर, ल० । दुश्मन शीस नमावेरे सुन्दर, ल० ॥ टेर ॥

दरिया बीच जहाज श्रावक की, डूबन खतरे आवे ।
सोचे मन सुमरे सद्गुरु को, दुःख की टेर सुनावेरे सुन्दर ॥ १ ॥

वाचताँ व्याख्यान सूरीश्वर, पँखीरूपे थावे ।
जाय समुद्रमें जहाज तिरायो, फिर पीछा जब आवेरे सुन्दर ॥ २ ॥

पूछे संघ अचरज मे भरिया, गुरु सब वात सुनावे ।
ऐसे दादा दत्त कुशल गुरु, परचा प्रगट दिखावेरे सुन्दर ॥ ३ ॥

बोथरा सूनरमल श्रावक को, दादा कुशल तिरावे ।
सुरनसूरि गुरु समयसुन्दर का, जहाज अलोप दिखावेरे ॥ ४ ॥

बारह सौइग्यारे दत्त सूरि, अजमेर अणसण ठावे ।
उपज्या सौधर्मा देवलोके, श्रीमंधर फरमावे रे सुन्दर ॥ ५ ॥

इक अवतारी कारज सारी, मुक्ति नगर में जावे।
ऐसे दादा दत्त सूरीश्वर, तारण तरण कहावे रे सुन्दर ॥ ६ ॥

मणिधारी दिल्ली में पूज्यां, संकट सपने न आवे।
रथी उठी नहीं[१] देख नरेश्वर, वॉही चरण पधरावेरे सुन्दर ॥ ७ ॥

कुशलसूरी देराउर नगरे, भुवनपति सुरथावे।
[२]फागुन वदि अम्मावस सीधा, पूनम दरश दिखावेरे सुन्दर ॥ ८ ॥

जल चन्दन फल फूल मनोहर, आठों द्रव्य चढावे।
वस्त्र इतर पूजा सद्गुरू की, 'ऋद्धि सार' मन भावे रे सुन्दर ॥ ६ ॥

श्लोक— अखिल होर शुचिः नवचीरकै, प्रवर प्रावरणै खलु गंधतः ।
सकलमङ्गलवाँच्छितदायकं, कुशलसूरिगुरोश्चरणौयजे ॥

ॐ ह्रीं श्री परमपुरुषाय परमगुरूदेवाय भगवते श्री जिन शासनोदीपकाय श्रीजिनदत्त-सूरीश्वराय मणिमण्डितभालस्थल श्री जिनचन्द्रसूरीश्वराय श्री जिनकुशलसूरीश्वाय अकबर असुर त्राणप्रतिबोधकाय श्रीजिनचन्द्रसूरीश्वराय वस्त्रं चोवा चन्दनं पुष्पं फलं निर्विपामिते स्वाहाः ॥६॥

१. भाद्रपद कृष्णा १४ वि० सं० १२२३

२. वि० स० १३८६ फागुन कृष्णा ३०

॥ अथ ध्वज पूजा ॥

ध्वज पूजा गुरुराज की, लहके पवन प्रचार । तीन लोक के शिखर पर, सो पहुँचे नर नार ।१।

(चाल—जिनगुणगानं श्रुति अमृतं)

ध्वज पूजन कर हरप भरी रे, ध्वज० । टेर ।

सज सोलह श्रृङ्गार सहेल्या, श्री सद्गुरु के द्वार खडी रे ।
अपछर रूप सुतन सुकलोनी, ठम ठम पग झणकार करी रे ॥ १ ॥

गावत मगल देत प्रदक्षिणा, धन धन आनन्द आज घडी रे ।
निर्धन को लक्ष्मी बरसावत, पुत्र विना जाके पुत्र करी रे ॥ २ ॥

जो जो परतिख परचा देख्या, सुणो भविक चित चाय धरी रे ।
फतहमल्ल भडगतिया श्रावक, पहली शंका जोर करी रे ॥ ३ ॥

देखू परतिख तव मैं जानू, प्रगट्या तत्क्षण तरण तरी रे ।
पुष्पमाल सिर केशर टीका, अधर श्वेत पोशाक करी रे ॥ ४ ॥

'मांग मांग वर' बोले बानी, फरक बताओ गुरु मेघ भरी रे।
फरक उगायो दोय लाख पर, तेरी महिमा नित्य हरी रे॥ ५॥

ज्ञानचन्द गोलेच्छा को गुरु, प्रत्यक्ष दीना दरस फरी रे।
बीकानेर में थुंभ तुम्हारा, चित्र करावत सुरसुन्दरी रे॥ ६॥

थानमल्ल लूनियां पर किरपा, लक्ष्मी लीला सहज बरी रे।
लक्ष्मीपति दूगड़ की साहिब, हुण्डी की भुगतान करी रे॥ ७॥

जो उपकार करा तुम मेरा, दीनी सन्मुख अमृत जड़ी रे।
तेरी कृपा से सिद्धि पाई, जागे यश अरु भागे मरी रे॥ ८॥

भूखा भोजन तिसियाँ पानी, भरत हाजरी देव परी रे।
विगम समय पर सहाय हमारे, 'ऋद्धिसार' की गरज सरी रे॥ ९॥

श्लोक— मृदु मधुर ध्वनि किङ्कणी नादकैः, ध्वज विचित्रितविस्तृतवासकैः।
सकलमङ्गलवाँच्छितदायक, कुशलसूरिगुरोश्चरणौयजे॥

ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय परमगुरुदेवाय भगवते श्री जिनशासनोद्दीपकाय श्रीजिनदत्तसूरीश्वराय मणिमण्डित भालस्थल श्रीजिनचन्द्रसूरीश्वराय श्री जिनकुशलसूरीश्वराय अकबर असुरत्राणप्रतिबोधकाय श्रीजिनचन्द्रसूरीश्वराय शिखरोपरि ध्वजां आरोपयामि स्वाहा॥१०॥

॥ अथ अर्घ पूजा ॥

भट्टारक पदवी मिली, जीते वादी वृन्द । कंठविराजे सरस्वती, जग में श्रीजिनचन्द ॥१॥

(राग आसावरी तथा धन्याश्री)

पूजन जग सुखकारी सुगुरु तेरी पू० । तेरे चरन कमल बलिहारी सुगुरु० ॥ टेर ॥
साह सलेम दिल्ली को बादशाह, सुनी है शोभा तिहारी । भट्ट हरायो चर्चा करके भट्टारकपदधारी ॥
अमावस की पूनम कीनी, चंद उगायो भारी । चढके गगन करी है चर्चा, सूरज से तपधारी ॥
[1]उगणीसौ चौदह संवत मे, लखनऊ नगर मझारी । गोरा फिरंगी टोपीवाला, दिलमे ये बात विचारी ॥
जैन श्वेताम्बर देव जो सच्चा, पूरे मनसा हमारी । वाणी निकल सौ वर्षों तक होवेगा अधिकारी ॥
अंधे की खोली आँख सूरत मे, पूजे सब नरनारी । कहाँ लग गुण वरनू मैं तेरा तू सुरतरु जयकारी ॥
उगणीं सौ संवत्सर त्रेपन, मंगसिर मास मझारी । शुक्ल दूज जिनचंदसूरीश्वर खरतर गच्छ आचारी ॥
कुशलसूरिके निज सतारी, खेमकीर्ति मनुहारी । प्रतिबोध्या जिनक्षत्री पाँचसौ, ज्ञान सहित अणगारी ॥
खेमधाड शाखा जब प्रगटी, जगमे आनदकारी । धर्मशील साधु गुण पूरे, कुशलनिधान उदारी ॥
ये पूजा करता सुख आनद, धन लक्ष्मी सारी । कहत 'रामऋद्धिसार' गुरू की जय-जयशब्द उचारी ॥

(यह पूजा पढकर चारों दिशा मे अर्घ दीजिये)

---

१ वि० स० १९१४ (सन् १८५७ ईस्वी)

॥ गुरुदेव की स्तुति ॥

श्री विलसे ऋद्धि समृद्धि मिली, शुभयोगे पुण्य दशा सफली।
जिनकुशलसूरि गुरु अतुल बली, मन वाञ्छित आपे दादा रङ्गरली ॥ १ ॥
मङ्गल लील समय विपुला, नव नवे महोत्सव राजेला।
सुपसाय गुरु चढ़ती कला, सुकुलीनी पुत्रवती महिला ॥ २ ॥
सबही दिन थाये सबला, सद्वास कपूर तने कुरला।
हय गय रथ पायक बहुला; कल्लोल करे मन्दिर कमला ॥ २ ॥
वीजे चमर निशान घुरे, निर्भय दरबार खड़ा पहुरे।
जय जय कर जोड़ी उचरे, सानिद्ध गुरु सब काज सरे ॥ ३ ॥
सरसा भोजन पान सदा, दुख रोग दुकाल न होय कदा।
अविचल ऊलट अङ्ग मुदा, गुरु पूरण दृष्टि प्रसन्न सदा ॥ ४ ॥
घम घम मादल नाद घुमे, बत्तीसे नाटक रंग रमे।
प्रगट्यो पुण्य प्रताप हमें, सबला अरियगण ते आय नमे ॥ ५ ॥
तन सुख मन सुख चीर तने, पहिरे वेलाउल होय रने।
ध्यावो ध्यावो कुशल गुरु एक मने, जृम्भक सुर मन्दिर भरे धने ॥ ६ ॥
ततखिन घन खेंचो आवे, करि श्याम घटा मेह वर्षावे।
तिसियां तोय तुरत पावे, जल दाता त्रिजग सुयश गावे ॥ ७ ॥

लहर्यां जल कल्लोल करे, प्रवहण भव सायर मझि डरे।
बूडंता वाहन जे समरे, ते आपद निश्चय थी उबरे॥ ८॥

खड़ खड़ खड़ग प्रहार रहे, सो दामिनि जिम समसेल सहे।
कुशल कुशल गुरु नाम कहे, ते खेम कुशल रण मध्य लहे॥ ९॥

थुम्भ सकल परचा पूरे, श्री नागपुरे सकट चूरे।
मगलौर अधिके नूरे, देराउर भय टालें दूरे॥ १०॥

वीरमपुर वाने सुघरे खंभाइतपुर विक्रम नयरे।
जिनचन्द्रसूरि पाटे पवरे, जसु कीरति महिमण्डल पसरे॥ ११॥

पूरब पश्चिम दक्षिण आगे, उत्तर गुरु दीपे सौभागे।
दश दिशि जन सेवा मागे, श्री खरतर गच्छनो महिमा जागे॥ १२॥

पुर पट्टण जन पद ठामे, गाईजे कुशल नयर ग्रामे।
पूजे जे नर हित कामे, ते चक्रवर्ती पदवी पामे॥ १३॥

श्री जिनकुशलसूरि साखे, सेवक जन ने सुखिया राखें।
समर्यां गुरु दरशन दाखे, श्री साधुकीरत पाठक भाखे॥ १४॥

॥ मेरी भावना ॥



जिसने राग-द्वेष कामादिक, जीते सब जग जान लिया ।
सब जीवों को मोक्ष मार्ग का, निस्पृह हो उपदेश दिया ॥

बुद्ध, वीर, जिन, हरि, हर, ब्रह्मा, या उसको स्वाधीन कहो ।
भक्ति भाव से प्रेरित हो यह, चित्त उसी में लीन रहो ॥

विषयों की आशा नहिं जिनके, साम्य-भाव धन रखते हैं ।
निज-पर के हित साधन में जो, निशदिन तत्पर रहते हैं ॥

स्वार्थ-त्याग की कठिन तपस्या, बिना खेद जो करते हैं ।
ऐसे ज्ञानी साधु जगत के, दुःख समूह को हरते हैं ॥

रहे सदा सत-संग उन्हीं का, ध्यान उन्हीं का नित्य रहे ।
उन ही जैसी चर्या में यह, चित्त सदा अनुरक्त रहे ॥

नहीं सताऊँ किसी जीव को, झूठ कभी नहिं कहा करूँ ।
परधन वनिता पर न लुभाऊँ, संतोषामृत पिया करूँ ॥
अहङ्कार का भाव न रक्खूँ, नहीं किसी पर क्रोध करूँ ।
देख दूसरों की बढ़ती को, कभी न ईर्ष्या भाव धरूँ ॥
रहे भावना ऐसी मेरी, सरल सत्य-व्यवहार करूँ ।
बने जहाँ तक इस जीवन में, औरों का उपकार करूँ ॥
मैत्री-भाव जगत में मेरा, सब जीवों पर नित्य रहे ।
दीन-दुखी जीवों पर मेरे, उर से करुणा श्रोत बहे ॥
दुर्जन क्रूर कुमार्गरतों पर, क्षोभ नहीं मुझ को आवे ।
साम्य भाव रक्खू मैं उन पर, ऐसी परिणति हो जावे ॥
गुणीजनों को देख हृदय में, मेरे प्रेम उमड़ आवे ।
बने जहा तक उनकी सेवा, करके यह मन सुख पावे ॥
होऊँ नहीं कृतघ्न कभी मैं, द्रोह न मेरे उर आवे ।
गुण ग्रहण का भाव रहे नित, दृष्टि न दोषों पर जावे ॥

कोई बुरा कहो या अच्छा, लक्ष्मी आवे या जावे।
लाखों वर्षों तक जीऊं या, मृत्यु आज ही आ जावे॥
अथवा कोई कैसा ही भय, या लालच देने आवे।
तो भी न्याय मार्ग से मेरा, कभी न पद डिगने पावे॥

होकर सुख में मग्न न फूलूं, दुख में कभी न घबराऊं।
पर्वत-नदी-श्मशान-भयानक, अटवी से नहिं भय खाऊं॥
रहे अडोल अकम्प निरन्तर, यह मन दृढ़तर बन जावे।
इष्टवियोग - अनिष्टयोग में, सहनशीलता दिखलावे॥

सुखी रहें सब जीव जगत के, कोई कभी न घबरावे।
वैर - पाप - अभिमान छोड़, जग नित्य नये मङ्गल गावे॥
घर घर चर्चा रहे धर्म की, दुष्कृत दुष्कर हो जावें।
ज्ञान चरित उन्नतिकर अपना, मनुज जन्म फल सब पावें॥